सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-33 अंक-9-10 (संयुक्त) | 22 मई से 6 जून, 2018 | मुख्य संपादक कॉमरेड प्रभास घोष | कुल पृष्ठ 8 | मूल्य : 2 रुपये

महान कार्ल मार्क्स जिन्दाबाद

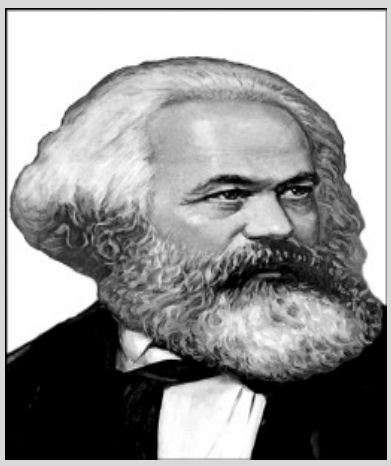

5 मई 1818 - 14 मार्च 1883

''इस कम्युनिस्ट चेतना के एक बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए, और स्वयं इस उद्देश्य-कारण की ही सफलता के लिए, दोनों के लिए ही लोगों का बड़े पैमाने पर परिवर्तन आवश्यक है, एक ऐसा परिवर्तन जो केवल एक व्यावहारिक आंदोलन में, एक क्रांति में ही हो सकता है; इसलिए यह क्रांति जरूरी है, यह क्रांति केवल इसीलिए ही जरूरी नहीं कि किसी अन्य तरीके से शासक वर्ग को सत्ता से उखाड़ फेंका नहीं जा सकता, बल्कि इसलिए भी कि इसे उखाड़ फेंक देने वाला वर्ग केवल क्रांति से ही सदियों के इस कूड़े-कर्कट से निजात पाने और नया समाज तैयार करने के लायक बन सकता है।'' - (जर्मन विचारधारा)

मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिंतन के आधार पर हमें मजबूती से खड़ा होना होगा

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 24 अप्रैल को पार्टी स्थापना की 70वीं वर्षगांठ पर कोलकाता में 48 लेनिन सरणी स्थित केन्द्रीय कार्यालय में पार्टी का झंडोत्तोलन और सर्वहारा के महान नेता कॉ. शिवदास घोष की तस्वीर पर माल्यार्पण कर अपनी श्रद्धा व्यक्त की। कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत की प्रस्तुति के बाद कॉमरेड प्रभास घोष ने संक्षेप में अपनी बात रखी। अंतर्राष्ट्रीय गान से कार्यक्रम का समापन हुआ। इस मौके पर पोलित ब्यूरो के वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड रंजीत धर और केन्द्रीय कमिटी सदस्य

24 अप्रैल का आह्वान
कॉमरेड प्रभास घोष

कॉमरेड गोपाल कुंडु सहित पश्चिम बंगाल राज्य के नेतागण मौजूद थे। उल्लेखनीय है कि राज्य में पंचायत चुनाव की वजह से इस साल पश्चिम बंगाल में राज्यस्तरीय जनसभा आयोजित नहीं की गयी। राज्य में इस बार स्थापना दिवस का कार्यक्रम जिला स्तर पर हुआ।

केन्द्रीय कार्यालय में कॉमरेड प्रभास घोष ने कहा : 24 अप्रैल का ऐतिहासिक तात्पर्य

(शेष पृष्ठ 2 पर)

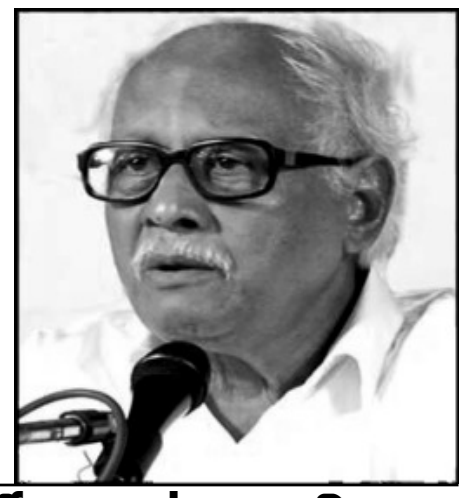

24 अप्रैल - देश भर में मनाया गया एसयूसीआई (सी) पार्टी का 70वां स्थापना दिवस

24 अप्रैल को एसयूसीआई (सी) पार्टी का 70वां स्थापना दिवस समारोह देश भर में मनाया गया। जगह-जगह जनसभाएं आयोजित की गई सभाओं की शुरुआत पार्टी स्थापना पर और इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी चिंतनकार, हमारी पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत से हुई। महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष की तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किये गए। अंतर्राष्ट्रीय गीत के साथ सभाओं का समापन हुआ।

नई दिल्ली : एसयूसीआई (सी) दिल्ली राज्य सांगठनिक कमेटी ने पार्टी के 70वें स्थापना दिवस के अवसर पर 23 अप्रैल को स्थानीय गाधी शांति प्रतिष्ठान हाल में जनसभा का आयोजन किया। सभा में सैंकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया। मुख्य वक्ता थे पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य तथा एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा। सभा की अध्यक्षता दिल्ली राज्य सचिव कॉ. प्राण शर्मा ने की।

अपने भाषण में कॉ. शंकर साहा ने पार्टी के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष और उनके मुठ्ठीभर साथियों द्वारा किये गये कष्टसाध्य संघर्ष का उल्लेख किया जिसके चलते 24 अप्रैल 1948 को पार्टी की स्थापना कन्वेंशन आयोजित हुई थी। कॉ. साहा ने बताया कि कैसे कॉमरेड घोष ने लेनिनवादी मॉडल

(शेष पृष्ठ 5 पर)

दिल्ली : पार्टी स्थापना दिवस पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए कॉ. शंकर साहा

अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस — मई दिवस पर सभाएं आयोजित

मुक्ति के लिए संघर्ष तेज करने का मजदूरों ने लिया संकल्प

हरियाणा : रोहतक, सोनीपत, रेवाड़ी, भिवानी, कैथल आदि में 1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर जुलूस निकाले गए व सभा की गई। सोनीपत में 1 मई को केन्द्रीय ट्रेड यूनियनों व कर्मचारी संगठनों की तरफ से सोनीपत रेलवे स्टेशन के पास से शुरू होकर गीता भवन चौक होते हुए बस अड्डे तक जुलूस निकाला गया। इसका नेतृत्व एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान कॉ. इन्द्र सिंह, एटक के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एन. पी. मुंजाल, नौजवान भारत सभा के सुमित कुमार, हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच (जेपीए) के प्रदेशाध्यक्ष आर.के. नागर आदि कर रहे थे।

भिवानी में नेहरू पार्क में हुई सभा की अध्यक्षता एआईयूटीयूसी की जिला कमेटी के सचिव कॉ. धर्मवीर सिंह ने की और संचालन जिला कमेटी सदस्य कॉ. राजकुमार जांगड़ा ने किया। सभा के मुख्य वक्ता एआईयूटीयूसी के जिला प्रधान कॉ. रामफल थे। सभा को कॉ. सुखबीर, कॉ. ममता, कॉ. देवदत्त व कॉ. वजीर ने भी सम्बोधित किया।

रेवाड़ी में मई दिवस पर राव तुलाराम पार्क में की गई सभा को हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच के नेता हरि सिंह मूलोधिया, किसान नेता कॉ. रामकुमार, एआईडीवाईओ के नेता कॉ. नरेश कुमार और खेत मजदूरों के नेता कॉ. राजबीर ने संबोधित किया। सभा की अध्यक्षता कृष्णा यादव ने की। मंच संचालन एआईयूटीयूसी के कॉ. राजेन्द्र सिंह ने किया। कैथल के ढाण्ड कस्बे में एआईयूटीयूसी से संबद्ध भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन हरियाणा के बैनर तले आयोजित सभा को कॉ. बाबूराम, कॉ. राजकुमार, कमल कुमार, जेठूराम और नंदलाल ने संबोधित किया।

वक्ताओं ने पहली मई के गौरवमय इतिहास पर प्रकाश डालते हुए बताया कि 8 घण्टे के कार्यदिवस जैसे अपने हकों के लिए मजदूरों ने आवाज बुलन्द की थी। उन्होंने पूंजीवादी शोषण-जुल्म के जाल को तोड़ फेंकने के लिए एकताबद्ध संघर्ष छेड़ा था। यह देश-दुनिया के संघर्षरत मजदूरों के साथ अपनी एकजुटता का इजहार करने का दिन है। मई दिवस के ऐतिहासिक महत्व को जानने-समझने और अपनी मुक्ति की लड़ाई तेज करने की जरूरत है। मई दिवस के

(शेष पृष्ठ 8 पर)

कॉ. प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 1 का शेष)

क्या है, महत्व क्या है–इससे सभी कॉमरेड अवगत हैं। कॉमरेड इस बात से भी अवगत हैं कि कितनी कठिन प्रतिकूलताओं में और कितनी दिक्कतों का सामना करते हुए गैर-समझौतावादी संघर्ष चलाकर महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्टालिन -माओ त्से-तुंग के योग्य उत्तराधिकारी महान शिक्षक व मार्क्सवादी चिंतक कॉमरेड शिवदास घोष ने एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पार्टी की स्थापना की थी। करोड़ों अत्याचारित-उत्पीड़ित लोगों के आंसुओं और दुख-तकलीफों को हृदय में संजोकर अंतर्राष्ट्रीय क्रांति और अपने देश में पूंजीवाद-विरोधी महान समाजवादी क्रांति के सपने को सामने रखकर उन्होंने इस पार्टी की स्थापना की थी।

आज हम किस परिस्थिति के समक्ष खड़े हैं? पूरी दुनिया में और हमारे देश में मानवजाति और सभ्यता भयंकर संकट के समक्ष खड़ी है। ऐसा संकट आयेगा, इसके बारे में महान मार्क्स-एंगेल्स-लेनिन-स्टालिन-माओ त्से-तुंग ने पहले ही आगाह कर दिया था। कॉमरेड शिवदास घोष ने इस संकट को कुछ हद तक देखा था। किसी सामाजिक व्यवस्था की किशोरावस्था होती है, यौनवावस्था होती है, उसमें प्रौढ़ता आती है और अंत में वृद्धावस्था आती है। आज का पूंजीवाद-साम्राज्यवाद मृत्यु शैय्या पर एक सड़ी-गली लाश की तरह पड़ा हुआ है। जीव जगत में प्राण के नियम के तहत जिस तरह जन्म और मृत्यु होती है, समाज के मामले में ऐसा नहीं होता। क्योंकि, मानव समाज के मामले में मनुष्य की चेतना की भूमिका महत्वपूर्ण है। वर्ग विभाजित समाज में शोषक वर्ग, प्रतिक्रियाशील वर्ग की चेतना और मुक्तिकामी शोषित जनता की प्रगतिशील चेतना का द्वन्द्व रहता है। जब तक अत्याचारित मुक्तिकामी जनता को सही क्रांतिकारी विचारों का पता नहीं चलता, क्रांतिकारी संस्कृति की जानकारी नहीं होती और वह जब तक क्रांतिकारी संगठन का निर्माण नहीं कर पाती, तब तक समाज में जितनी भी गिरावट क्यों न आये, शोषणूलक समाज व्यवस्था की मौत नहीं होती। यही इतिहास का नियम है। आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक–हर पहलू से विश्व पूंजीवाद, हमारे देश का पूंजीवाद कुछ अच्छा देने की स्थिति में नहीं है। वह सिर्फ हमें बर्बादी ही दे सकता है, हममें और गिरावट ला सकता है। हम एक ऐसी ही भयंकर स्थिति के सामने खड़े हैं। एक तरफ कुछ मुट्ठीभर लोगों के हाथों में सम्पदा का अत्यधिक केन्द्रीकरण हुआ है, तो दूसरी तरफ तेजी से बढ़ती गरीबी, भूख और भूख से मौतें हैं। एक तरफ पूंजीपतियों के पास धन का बड़े पैमाने पर केन्द्रीकरण, तो दूसरी तरफ बेइंतहा भूख और मौतें। एक तरफ अत्यधिक मुनाफा हासिल करना, तो दूसरी तरफ बड़े पैमाने पर बेरोजगारी और छंटनी में लगातार इजाफा। साम्राज्यवाद के सरगना अमेरिका से लेकर भारत, अफ्रीका, यूरोप तथा लातिन अमेरिका के विभिन्न देशों में यह संकट आज चरम रूप में दिखाई दे रहा है। आज भयंकर रूप से बाजार संकट से ग्रसित साम्राज्यवादी-पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के सिर तक पानी आ पहुंचा है। कुछ दिनों पहले साम्राज्यवादी दुनिया का सरगना खुद संयुक्त राज्य अमेरिका दुनिया के बाजार को निगलने के लिए भूमंडलीकरण की योजना को जारी रखने का पैरोकार था। आज वह देख रहा है कि इस योजना की वजह से उसके गृह बाजार को ही काफी हद तक साम्राज्यवादियों- पूंजीवादियों ने निगल लिया है। उसके उद्योगों पर संकट है। छंटनी बढ़ रही है। बेरोजगारी बढ़ रही है। इसलिए वह 'भूमंडलीकरण नहीं चाहिए' का नारा बुलंद कर रहा है। उसने विदेशी सामानों को रोकने के लिए सुरक्षा की दीवार खड़ी की है। दूसरे भी यही रास्ता अपना रहे हैं। अब बड़े पैमाने पर वाणिज्य युद्ध दिखाई दे रहा है। कौन कह सकता है कि इसके बाद सशस्त्र युद्ध नहीं छिड़ेगा? साम्राज्यवाद-पूंजीवाद का मतलब ही है लूट के बाजार को लेकर छीना-झपटी, मारामारी। प्रथम विश्व युद्ध के ठीक पहले लेनिन ने कहा था कि साम्राज्यवाद के युग में पूंजीवाद मरणासन्न दौर में चला गया है। आज वह पूंजीवाद सड़े-गले मुर्दे की तरह बदबू दे रहा है। वह आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक तथा नैतिक जीवन–हर चीज को बर्बाद कर रहा है।

बीसवीं शताब्दी में पूंजीवाद के क्षयोन्मुख युग में भी रोमां रोलां, बर्नार्ड शॉ, आइंस्टीन आदि मानवता का परचम थामे रहे। उनके पीछे थे रसेल, सार्त्र आदि। साम्यवाद का परचम थामे खड़े थे महान लेनिन-स्टालिन-माओ त्से-तुंग और हमारे देश में कॉमरेड शिवदास घोष। हमारे देश में राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और ज्योतिबाराव फुले ने मानवतावाद के परचम को लेकर सफर की शुरुआत की। इसके बाद आगे आये रवीन्द्रनाथ टैगोर, शरत्चन्द्र चटर्जी, काजी नजरूल इस्लाम और मुंशी प्रेमचंद। राजनैतिक क्षेत्र में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, चित्तरंजन दास, भगत सिंह सहित अन्य क्रांतिकारी आगे आये। आज सिर्फ भारत में ही नहीं, दुनिया के किसी भी पूंजीवादी देश में मानवतावादी मूल्यों के निशान नहीं बचे हैं। हम देख रहे हैं कि तमाम पूंजीवादी देशों के राष्ट्र प्रमुख पाखंडी, धोखेबाज और झूठे हैं, यहां तक कि उनमें कोई-कोई लम्पट भी हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति के खिलाफ रोजाना कोई-न-कोई यौन उत्पीड़न की घटना उजागर हो रही है। हमारे यहां के भी राष्ट्र नायक झूठे हैं, पाखंडी हैं। वे जनता के साथ धोखाधड़ी कर रहे हैं, उसे ठग रहे हैं, उससे झूठ बोल रहे हैं। 'लोकतंत्र' सिर्फ बातों में रह गया है। वे इंसानियत पर हमले कर रहे हैं। जानवर के साथ मनुष्य का जो अंतर है, वह है मनुष्य में चिंतन शक्ति की मौजूदगी, जिसके आधार पर सभ्यता का निर्माण हुआ है। और, इस सभ्यता के श्रेष्ठ योगदान थे मानवीय मूल्य, न्याय-नीतिबोध, कर्तव्यबोध। जब से समाज सभ्य होना आरंभ हुआ, तब से हर समाज में इन्हें बेशकीमती माना गया। आज साम्राज्यवाद-पूंजीवाद इंसानियत की हत्या कर रहा है। हर पहलू से न्याय-नीति बोध, मूल्यबोध नाम की कोई चीज नहीं रह गयी है। नवजागरण के पथप्रदर्शकों और हमारे देश के आजादी आंदोलन के नेताओं ने ऐसी परिस्थिति नहीं देखी थी। आज स्नेह, माया, ममता, कर्तव्यबोध, निजी जीवन में पारस्परिक प्यार-मुहब्बत का रिश्ता–सब कुछ को शासक वर्ग बर्बाद कर रहा है। 70 साल की वृद्धा से लेकर 7 माह की बच्ची तक का प्रायः रोजाना बलात्कार हो रहा है। जन्म देने वाले पिता के खिलाफ बेटी बलात्कार का आरोप लगा रही है। पहले के जमाने के किसी महापुरुष ने इन चीजों को नहीं देखा था। आज हम रोजाना इन सारी चीजों को देख रहे हैं। यही है पूंजीवाद की पैदाइश। पूंजीवाद आदमी को इंसानियत से रहित बना रहा है। मनुष्य देहधारी जिसकी इंसानियत मर चुकी ऐसी एक नयी प्रजाति, जो बर्बर युग में भी नहीं थी, यहां तक कि जांगल युग में भी नहीं थी, जो प्राणी जगत में भी नहीं मिलती है, ने ऐसी स्थिति पैदा की है। तर्क, विचार, जिम्मेदारीबोध, कर्तव्यबोध, चिंतन आदि को बर्बाद कर दो। मानव को अमानव बना दो। मनुष्य में कोई मानवीय मूल्य न रहने पाये। शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को टिकाये रखने के लिए सम्पूर्ण युवा वर्ग तथा छात्र समुदाय को हर पहलू से गलत रास्ते पर ले जाया जा रहा है। उन्हें गंदी यौनता और आपराधिक गतिविधियों की कीचड़ में धकेला जा रहा है। आज हम ऐसे हालात से रूबरू हैं।

हम कॉमरेड शिवदास घोष के छात्र हैं। हम सभी संकल्पित हैं, हम सभी अपनी इच्छा से पार्टी में शामिल हुए हैं। हम जानते हैं कि कॉमरेड शिवदास घोष ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को इस देश की विशेष परिस्थिति में विशेष तौर पर लागू कर इसे सिर्फ विकसित ही नहीं किया, वरन् उन्होंने लेनिन के बाद के जमाने में दार्शनिक तौर पर उभरे सवालों तथा विज्ञान की दुनिया में उभरे सवालों का हल निकाला। साथ ही आज के जमाने में एक सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी का निर्माण कैसे करना चाहिए, सर्वहारा जनतंत्र क्या है, सर्वहारा संस्कृति क्या है, साम्यवादी आंदोलन की समस्याएं क्या हैं, किन कारणों से समाजवाद के अंदर संशोधनवाद के रास्ते पूंजीवाद फिर से सिर उठा रहा है और उसके लौटने का खतरा बना हुआ है आदि सवालों पर उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान भंडार को समृद्ध किया। आज विभिन्न देशों की अत्याचारित-उत्पीड़ित जनता अपना विक्षोभ प्रकट कर रही है, लड़ रही है, आंदोलन कर रही है। विक्षोभ-प्रदर्शन और आंदोलन ज्वार की तरह आ रहे हैं, फिर भाटा आ जाता है, ठहराव आ जाता है। क्योंकि, उनके पास नेतृत्व नहीं है, उन्हें सही रास्ते की जानकारी नहीं है। विश्व समाजवादी व्यवस्था और विश्व साम्यवादी आंदोलन आज नहीं रहा। विभिन्न मुल्कों में सही कम्युनिस्ट नेतृत्व भी नहीं है। वहां कम्युनिस्ट आंदोलन निर्मित करने की छिटपुट कोशिशें हो रही हैं। लेकिन हम जानते हैं कि आज के जमाने के विकसित मार्क्सवाद कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों को न अपनाने से किसी भी देश में सही मार्क्सवादी पार्टी का निर्माण नहीं हो पायेगा। इसलिए कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों को हमें अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भी ले जाना होगा। ऐसा करने के लिए हमारी पार्टी की ताकत को और बढ़ाना होगा। मौजूदा ताकत के सहारे हम इस सीख को हर जगह नहीं ले जा सकते। जब तक हम इस सीख को हर जगह नहीं ले जा पा रहे हैं, तब तक बार-बार विक्षोभ-प्रदर्शन होंगे, बार-बार 'वाल स्ट्रीट पर कब्जा करो' आंदोलन होंगे, 'अरब बसंत' जैसे आंदोलन होंगे, यूरोप में हड़तालों का सैलाब आ जायेगा; लेकिन पूंजीवाद-साम्राज्यवाद टिका रहेगा। संकट में और इजाफा होगा।

हमारे देश में भी लोगों का विक्षोभ-प्रदर्शन हो रहा है, लोगों के मन में जमा असंतोष-विक्षोभ का समय-समय पर प्रस्फुटन भी हो रहा है। यह सही है कि हमारी पार्टी की ताकत बढ़ रही है, लेकिन जितनी ताकत रहने से इन विक्षोभों को हम संगठित लगातार जन आंदोलन में तब्दील कर सकते हैं, वह ताकत हम आज भी हासिल नहीं कर पाये हैं। यह सही है कि हमारे देश में भाजपा के शासन ने एक नग्न फासीवादी शक्ल अख्तियार की है। लेकिन यह बात भी सही नहीं है कि भाजपा ही पहली बार देश में फासीवाद लायी है। देश में कांग्रेस फासीवाद लायी। कॉमरेड शिवदास घोष ने बहुत दिनों पहले ही यह बात कही थी। आज का विश्व पूंजीवाद विकसित व पिछड़े– सभी देशों में फासीवाद की राह अख्तियार कर चुका है। फासीवाद क्या है, उसके आर्थिक लक्षण क्या हैं, राजनैतिक लक्षण क्या हैं, सांस्कृतिक लक्षण क्या हैं–इन बातों को उन्होंने दुनिया के सामने पेश किया है। भाजपा ने जो आज सिर उठाया है, उसकी जमीन भी कांग्रेस ने ही तैयार की थी। कांग्रेस ने बुर्जुआ वर्ग के हित में राजनैतिक क्षेत्र में सिर्फ नेताजी सुभाषचन्द्र बोस-भगत सिंह-खुदीराम बोस की राजनैतिक क्रांतिकारिता का ही विरोध नहीं किया, जिस आध्यात्मवाद के खिलाफ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने संघर्ष किया था, शरत्चन्द्र ने परचम उठाया था, भगत सिंह ने झण्डा बुलंद किया था; उसका भी उसने विरोध किया था। कांग्रेस ने धर्म से समझौता किया, आध्यात्मवाद से समझौता किया और उसके नतीजे हमारे सामने हैं–साम्प्रदायिक दंगे, देश का बंटवारा। देश में आध्यात्मवाद का विचार, धार्मिक नफरत, जातिगत भेदभाव आदि की पैदाइश एवं वृद्धि कांग्रेस की समझौतावादी धारा की वजह से ही हुई है। दूसरी तरफ तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टी, अविभाजित कम्युनिस्ट पार्टी, जो कभी भी मार्क्सवादी पार्टी नहीं रही, ने कभी भी आध्यात्मवाद के खिलाफ, धार्मिक अंधता के खिलाफ, साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष नहीं किया। उसने विश्व साम्यवादी आंदोलन के गौरव का इस्तेमाल कर अपनी ताकत में बढ़ोतरी की। उसने देश में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस-भगत सिंह-सूर्य सेन के क्रांतिकारी आंदोलन के गौरव का इस्तेमाल कर सिर्फ अपनी ताकत बढ़ायी। उसने कभी मार्क्सवाद का अभ्यास तो किया ही नहीं, किसी विकसित संस्कृति का भी अभ्यास नहीं किया। आध्यात्मवाद और साम्प्रदायिक नफरत खत्म करने के संघर्ष में उसका कोई योगदान नहीं है, कोई विरासत नहीं है। यदि ऐसा नहीं होता, तो जो पश्चिम बंगाल एक जमाने में वामपंथ का गढ़ था, उसी पश्चिम बंगाल में इस तरह से भाजपा सिर नहीं उठा पाती। जिन्होंने एक जमाने में सीपीआई(एम) की, उनके नेता-कार्यकर्ता आज कैसे भाजपा में शामिल हो रहे हैं? यदि किसी में तनिक भी वामपंथ की विरासत होती, तो क्या ऐसा होता? भाजपा इस स्थिति में नहीं आ पाती। दरअसल वहां वामपंथ का नारा था, वामपंथ की संस्कृति नहीं थी, वामपंथी विचारों पर अमल नहीं किया था। इतना ही नहीं, भाजपा ने कब सिर उठाया? 1967-69 में सीपीआई(एम) ने मोरारजी देसाई की सिंडिकेट कांग्रेस के खिलाफ इंदिरा कांग्रेस को प्रगतिशील बताया था। जो बुजुर्ग हैं, उन्हें पता है कि आगे चलकर कांग्रेस के खिलाफ जब देश में जयप्रकाश नारायण की अगुवाई में जन आंदोलन की लहर चल रही थी, पूरी हिन्दी पट्टी में काफी आंदोलन हो रहे थे, हमारी पार्टी चाहती थी, कॉमरेड शिवदास घोष चाहते थे कि वामपंथी उस आंदोलन की अगुवाई करें। तब सीपीआई इंदिरा गांधी की मित्र थी, सीपीआई(एम) के साथ इंदिरा गांधी की दोस्ती थी, इसलिए उन्होंने उस आंदोलन में भाग नहीं लिया। उस आंदोलन का ही इस्तेमाल कर जनसंघ-आरएसएस ने अपनी ताकत बढ़ायी। यदि ऐसा नहीं होता, तो जनसंघ-आरएसएस इस स्थिति में नहीं आ पाते। इस बात को आपको याद रखना होगा। यह भी आपको याद दिलाना चाहूंगा कि 1977 में जब चुनाव हुआ, तो जनसंघ-आरएसएस और अन्य दक्षिणपंथी दलों को लेकर जनता पार्टी बनी। उस जनता पार्टी को चुनावी हित में सीपीआई(एम) ने समर्थन दिया था। मोरारजी देसाई केन्द्र में प्रधानमंत्री बने, पश्चिम बंगाल में ज्योति बोस बने थे मुख्यमंत्री। वे सत्ता में एक दूसरे की गलबांही करके आये थे। उस मंत्रिमंडल में तत्कालीन जनसंघ तथा आगे चलकर भाजपा नेता अटल बिहारी वाजपेयी और लालकृष्ण आडवाणी भी शामिल थे, जिस सरकार को सीपीआई(एम) ने मित्र सरकार कहा था। यही है इतिहास। आप लोगों को याद दिलाना चाहूंगा कि वी. पी. सिंह सरकार को एक तरफ भाजपा ने समर्थन दिया था, तो दूसरी तरफ सीपीआई(एम) ने। इस कोलकाता के शहीद मीनार मैदान में अटल बिहारी वाजपेयी और ज्योति बोस ने सभा की। इसलिए भाजपा की शक्ति-वृद्धि में, भाजपा की सामाजिक स्वीकार्यता की वृद्धि में सीपीआई(एम) का योगदान किसी मायने में कम नहीं है। पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चे के 34 सालों के शासन ने वामपंथ की विरासत को बर्बाद किया है, जनता को वामपंथ का विरोधी बनाया है। कॉमरेड शिवदास घोष ने

(शेष पृष्ठ 7 पर)

डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत पर हिन्दुत्ववादियों का हमला

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री 'सत्यदृष्टा' सत्यपाल सिंह ने एक नयी सच्चाई को 'उजागर' किया है। हाल ही में उन्होंने चार्ल्स डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत (Theory of Evolution) को नकारने की कोशिश करते हुए कहा है कि डार्विन का सिद्धांत 'वैज्ञानिक रूप से गलत' है। उनकी व्याख्या है, ''हमारे पूर्वजों ने कभी किसी बंदर को आदमी बनते देखने का उल्लेख नहीं किया है। किसी ने भी नहीं कहा है कि उसने ऐसा होते कभी देखा है। हमारे पूर्वजों द्वारा लिखित किसी भी पुस्तक या कथा-कहानी में ऐसी घटना का जिक्र नहीं है। इसलिए इस सिद्धांत को विज्ञान के पाठ्यक्रम से हटा दिया जाये।''

स्वाभाविक तौर पर मानव संसाधन विकास मंत्रालय के मंत्री की इस तरह की गैर-जिम्मेदराना और विज्ञान-विरोधी टिप्पणी के खिलाफ देश भर में विरोध का तूफान उठ खड़ा हुआ है। खास तौर पर देश के चोटी के वैज्ञानिकों ने इसका कड़ा विरोध किया है। देश की तीन शीर्ष विज्ञान अकादमियों ने एक संयुक्त बयान जारी कर कहा है, ''मंत्री महोदय की बात का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। क्रमविकास का सिद्धांत, जिसमें डार्विन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, पूरी तरह से स्थापित है। क्रमविकास के सिद्धांत की वास्तविकता को लेकर वैज्ञानिकों के बीच कोई बहस नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सिद्धांत है और ऐसा सिद्धांत है, जिसके आधार पर इस तरह के अनेक अनुमान या भविष्यवाणी (Predictions) करना संभव हुआ है, जो परीक्षण-निरीक्षण के जरिये सत्य साबित हुए हैं। इस सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस ग्रह पर निवास करने वाले मनुष्य और अन्य बंदर जैसे जीव सहित तमाम जीव किसी न किसी जीव के पूर्वज (Progenitor) से क्रमविकास की प्रक्रिया में आये हैं।''

2000 से भी ज्यादा पहली पंक्ति के वैज्ञानिक इन विज्ञान अकादमियों से जुड़े हुए हैं। ये विज्ञान अकादमियां हैं: नयी दिल्ली की दि इंडियन नेशनल साइंस अकादमी, बेंगलुरू की दि इंडियन अकादमी ऑफ साइंसेस तथा इलाहाबाद की दि नेशनल अकादमी ऑफ साइंसेस ऑफ इंडिया।

उक्त बयान में वैज्ञानिकों ने आगे कहा है, ''स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रम से क्रमविकास के अध्याय को हटाने या इसकी गैर-वैज्ञानिक व्याख्या करने और मिथकों या कल्पित कथाओं (Myth) को पाठ्यक्रम में शामिल कर क्रमविकास के वैज्ञानिक सिद्धांत को महत्वहीन करने का कोई भी फैसला दरअसल पीछे की ओर ले जाने वाला कदम होगा। क्रमविकास संबंधी 'प्राकृतिक चयन' (Natural Selection) के सिद्धांत का, जिसकी खोज डार्विन ने की थी तथा जो बाद में और समृद्ध हुआ, आधुनिक जीव विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र तथा निश्चित तौर पर आधुनिक विज्ञान में काफी प्रभाव है। सारी दुनिया के विज्ञान जगत में यह सर्वजन स्वीकार्य सिद्धांत है।

उपरोक्त वैज्ञानिकों ने मंत्री महोदय के बयान के खिलाफ एक ऑनलाइन पीटिशन पर हस्ताक्षर किये हैं। अब तक 5000 से भी ज्यादा वैज्ञानिकों ने इस पर हस्ताक्षर किये हैं। अखिल भारतीय विज्ञान संगठन ब्रेकथ्रू साइंस सोसाइटी की ओर से डार्विन की जयंती 12 फरवरी से 18 फरवरी तक प्रतिवाद सप्ताह का आयोजन किया गया।

वैज्ञानिकों द्वारा काफी विरोध के बावजूद मंत्री महोदय अपने बयान पर अड़े हुए हैं। उनका दावा है कि वे विज्ञान जगत के व्यक्ति हैं। उन्होंने कहा है, ''दुनिया भर में डार्विन के सिद्धांत को चुनौती दी जा रही है। डार्विनवाद एक मिथक है। मैं यदि कोई बात कहता हूं, तो वह निराधार नहीं होती है। मैं विज्ञान की बैकग्राउंड से आया हूं, कला की बैकग्राउंड से नहीं। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय में रसायन शास्त्र से पीएचडी की है।''

वे इससे भी आगे बढ़कर जोर देकर कहते हैं, ''यदि मानव संसाधन विकास मंत्रालय वित्त प्रदान करे, तो मैं इस बात को तय करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव करता हूं कि डार्विन का सिद्धांत स्कूल-कॉलेजों में पढ़ाया जाये या नहीं।''

इसलिए बात ऐसी नहीं है कि मंत्री महोदय ने गलती से ऐसा कह दिया है। यह उनकी 'सुविचारित' राय है और वे अपनी राय को ही 'वैज्ञानिक' कहकर स्थापित करना चाहते हैं। इसलिए जिस तरह डार्विन के क्रमविकास के वैज्ञानिक आधार को सही ढंग से समझने की जरूरत है, उसी तरह इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि डेढ़ सौ साल से ज्यादा समय से अनेक परीक्षण-निरीक्षण द्वारा प्रमाणित व स्थापित किसी वैज्ञानिक सिद्धांत को नकारने के पीछे केन्द्र की भाजपा सरकार की मंशा क्या है?

जीवों की क्रमविकास संबंधी अवधारणा

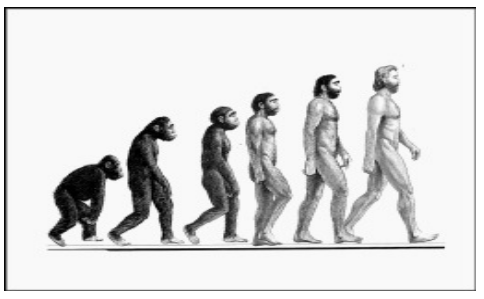

बात ऐसी नहीं है कि सत्यपाल सिंह ने बिलकुल नयी बात कह दी है। प्राचीन काल में, यहां तक कि नवजागरण के पहले भी, जब भूविज्ञान (Geology) और जीवविज्ञान (Biology) का विकास नहीं हुआ था, तब आदमी जीवों की पैदाइश के संबंध में जिस तरह की अवधारणा लेकर चला करता था, 'रसायन शास्त्र में पीएचडी डिग्रीधारी' मंत्री महोदय का विचार उसी से मिलता-जुलता है। उन दिनों मनुष्य ने अपने अनुभव से महसूस किया था कि अपने जीवन-काल में जो पेड़-पौधे, जंतु-जानवर उसने देखे, उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इसलिए मनुष्य ने मान लिया था कि तमाम पेड़-पौधे, जीव-जंतु शुरू से ऐसे ही थे। धार्मिक ग्रंथों में कहा गया था कि इस विश्व ब्रह्मांड की जिसने सृष्टि की है, उसने ही मनुष्य की सुविधा-असुविधा को ध्यान रखकर ये चीजें बनायी हैं। यहां तक कि जिन्होंने जीव विज्ञान के अभ्यास की शुरुआत की थी, वे अरस्तु (Aristotle) भी इसी सोच के शिकार थे। उन्होंने जीव जगत को कई वर्गों में विभाजित किया था। ये वर्गीकरण विशुद्धता की मात्रा के अनुसार निर्धारित थे। क्रम विन्यास के निम्न स्तर पर थे खनिज पदार्थ। ऊपरी पायदान पर था आदमी। अरस्तु का मानना था कि दुनिया अपरिवर्तनशील है। तमाम सजीव और निर्जीव जगत विशुद्धता की मात्रा को बरकरार रखते हुए शाश्वत काल से एक ही हैं। इस सोच के साथ बाइबिल की सोच का मेल था। यही वजह है कि इस सोच ने करीब दो हजार सालों तक सामाजिक मानसिकता में अपनी जगह बनाये रखी।

नवजागरण के जमाने में इस सोच को लेकर सवाल पैदा हुए। व्यापार-वाणिज्य के बड़े पैमाने पर फैलाव को केन्द्र कर जब आदमी की परिचित दुनिया का विस्तार हुआ, नित्य नये अनुभवों से वह समृद्ध होने लगा, तब नये-नये सवाल भी पैदा हुए। नयी-नयी जगहों पर नये-नये पेड़-पौधे और प्राणी दिखाई पड़े। खासकर जीवाश्म (Fossil) की खोज ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। भूवैज्ञानिकों (Geologists) ने ऐसे अनेक प्राणियों और पौधों के जीवाश्मों की खोज की, जिनका कोई जीवित सदस्य नहीं था। सवाल उठा कि इनका जन्म कब हुआ था और ये विलुप्त कब हुए? क्यों विलुप्त हुए? इसके साथ एक और घटना काबिले जिक्र है। वैज्ञानिक कार्ल लीनियस (Carl Linnaeus) ने विभिन्न पौधों और प्राणियों का वर्गीकरण (Classification) और नामरकण (Nomenclature) करने के क्रम में एक घटना पर गौर किया। उन्होंने देखा कि पौधों और प्राणियों की इन खास-खास प्रजातियों (Species), वंशों (Genus) आदि जन समूहों में कुछ की शारीरिक बनावट सरल है, तो कुछ की जटिल। जिनकी शारीरिक बनावट सरल है, उनकी जैविक क्रिया-प्रक्रिया भी सरल है और, जिनकी शारीरिक बनावट जटिल है, उनकी जैविक क्रिया-प्रक्रिया भी जटिल है। उन्होंने विभिन्न पौधों और प्राणियों की शारीरिक बनावट की समानताओं और विभेदों के आधार पर उन्हें विभिन्न प्रजातियों और गणों में वर्गीकृत किया। जैसे बाघ, चीता, जैगुआर, शेर और पालतू बिल्ली में समानताएं हैं। इसलिए वे एक ही वंश के सदस्य हैं। सवाल है कि विभिन्न पौधों और प्राणियों के बीच समानताएं क्या मनमानी हैं या कि इनके बीच कोई कार्य-कारण संबंध है? क्या सरल और जटिल शारीरिक बनावट वाले प्राणियों की पैदाइश एक साथ हुई है या कि इनमें कोई क्रम है?

इस क्षेत्र में भूवैज्ञानिकों ने एक महत्वपूर्ण बात कही। देखा गया कि जो जीवाश्म पृथ्वी की जितनी प्राचीन सतहों पर पाये जा रहे हैं, आम तौर पर उनकी शारीरिक बनावट उतनी ही सरल है और जो जीवाश्म पृथ्वी के जितने आधुनिक काल की सतहों पर पाये जा रहे हैं, आम तौर पर उनकी शारीरिक बनावट उतनी ही जटिल और विविधतापूर्ण है।

इस तथ्य से यह साफ हो गया कि पृथ्वी पर सारे पौधों या सारे प्राणियों की पैदाइश एक साथ नहीं हुई है। कुछ की पैदाइश पहले तथा कुछ की बाद में हुई है। यानी उनकी पैदाइश का एक क्रम है।

जैव क्रमविकास की अवधारणा की शुरुआत : लामार्कवाद

ऐसा होता क्यों है? अनेक लोगों ने उन दिनों इस सवाल का जवाब ढूंढ़ा। लेकिन वैज्ञानिक लामार्क ने पहली बार इस सवाल का विज्ञान आधारित जवाब देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि पौधे या प्राणियों के क्रमविकास का तात्पर्य है मुख्यत: जीवों के विभिन्न अंगों का रूपांतरण और उसके जरिये धीरे-धीरे नये जीवों की उत्पत्ति। लेकिन यह रूपांतरण होता क्यों है? इसके जवाब में लामार्क ने अंगों के व्यवहार-अव्यवहार (Use and disuse of organs) का सिद्धांत पेश किया। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक वातावरण के परिवर्तन के नतीजतन एक खास वातावरण का अभ्यस्त कोई पौधा या प्राणी जब किसी नये भिन्न वातावरण में आ जाता है, तब उस स्थिति के साथ सामंजस्य बैठाने के क्रम में उस प्राणी के किसी-किसी अंग की जरूरत बढ़ जाती है, इसलिए उसका व्यवहार भी बढ़ जाता है। दूसरे अंगों की जरूरत घट जाती है, इसलिए उसका व्यवहार भी घट जाता है। जिस अंग का व्यवहार बढ़ता है, उसका विकास होता है, वह सुगठित होता है और स्थायी रूप लेता है। जिस अंग का व्यवहार कम हो जाता है, वह विलुप्त होने की दिशा में बढ़ता है। इस तरह से कई पीढ़ियां गुजरने के बाद उस प्राणी की शारीरिक बनावट में बदलाव आ जाता है और एक समय नयी प्रजाति (Species) की सृष्टि होती है। यही है लामार्क के व्यवहार-अव्यवहार सिद्धांत की मुख्य बात।

क्रमविकास की यह प्रक्रिया उपार्जित लक्षणों की वंशागति के सिद्धांत (Inheritance of acquired characteristics) के नाम से मशहूर है। उनके अनुसार व्यवहार तथा अव्यवहार की प्रक्रिया के नतीजतन प्राणियों के शरीर में जो धीरे-धीरे परिवर्तन होता है, वह पीढ़ी-दर-पीढ़ी उसकी संतानों में वंशागत होता है। इस तरह अनेक पीढ़ियों के बाद की संतानें अपने पूर्वजों से भिन्न हो जाती हैं तथा नयी प्रजाति बन जाती है। इस सिद्धांत द्वारा अनेक प्राणियों के क्रमविकास की व्याख्या तो कर पाना संभव हुआ, पर कुछ सवाल रह गये। जैसे पूरी तरह से नये तरह के अंगों का निर्माण क्या है? क्या सचमुच जो अंग व्यवहृत होते हैं और उसके आधार पर विकसित होते हैं, वे बाद की पीढ़ी में वंशागत होते हैं? अनेक परीक्षण-निरीक्षण के बाद पता चला कि किसी प्राणी के जीवनकाल में व्यवहार या अव्यवहार के चलते उपार्जित लक्षण बाद की पीढ़ी में वंशागत नहीं होते।

डार्विन और क्रमविकासवाद

लामार्क की क्रमविकास संबंधी सोच ने उनके बाद के वैज्ञानिकों को काफी प्रभावित किया। चार्ल्स डार्विन उनमें प्रमुख थे। जीवों की पैदाइश क्रमविकास से हुई है। इस सोच के आधार पर डार्विन ने काम करना शुरू किया। अपनी 'प्रजाति की उत्पत्ति' (Origin of species) नामक पुस्तक में डार्विन ने दो विषयों से संबंधित साक्ष्य पेश किये। इनमें पहला है, क्रमविकास का अस्तित्व और दूसरा है क्रमविकास की प्रक्रिया के संबंध में सिद्धांत यानी प्राकृतिक चयन (Natural selection)। लामार्क की तरह डार्विन भी इस विषय पर निश्चित थे कि अतीत की तरह लेकिन कुछ-कुछ तफर्का वाले पूर्वजों से ही आज की प्रजातियों की पैदाइश हुई है। इस संबंध में उन्होंने जिन अनेक साक्ष्यों व सबूतों को पेश किया, वे मुख्यत: पालतू और वन्य जीवों के प्रकार (Varities) संबंधी उनके ज्ञान से प्राप्त हुए थे। इस संबंध में जीव जगत के वर्गीकरण, तुलनात्मक शरीर क्रिया विज्ञान (Physiology), भ्रूण विज्ञान (Embroyology), प्रजातियों के भौगोलिक बंटवारे, भूविज्ञान-इन तमाम विषयों में उनके अथाह पांडित्य ने भी उन्हें मदद पहुंचायी। लेकिन डार्विन माननीय मंत्री सत्यपाल जी की तरह 'साइंस के बैकग्राउंड' से नहीं थे। वे सही मायने में वैज्ञानिक मानसिकता से लैस थे। इसलिए वैज्ञानिक अनुसंधान के जरिये उन्होंने अपनी सोच निर्मित की थी और उस सोच की साक्ष्यों और सबूतों के आधार पर बार-बार जांच की थी। सत्यपाल जी की तरह उन्होंने मनगढंत सोच के आधार पर कुछ भी नहीं कहा। क्रमविकास के संबंध में डार्विन द्वारा दिये गये साक्ष्यों व सबूतों में से अधिकांश प्राप्त हुए थे बीगल जहाज पर उनके पांच साल के भ्रमण के दौरान। पांच साल की इस लम्बी समुद्री यात्रा में बीगल बीच-बीच में काफी देर तक रूका रहता था। उसका अधिकांश समय गुजरा दक्षिण अमेरिका के समुद्र में। अटलांटिक महासागर के अनजाने, अपरिचित द्वीप में उससे भी अधिक अनजाने, अपरिचित जैव विविधता में वे तल्लीन हो गये थे। इस यात्रा के संचित अनुभवों ने ही उन्हें क्रमविकास के सिद्धांत पर सोचने पर विवश किया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न द्वीपों के प्राणियों पर काफी बारीकी से गौर किया। दक्षिणी अमेरिका के उत्तर से दक्षिण किस तरह प्रजातियों में परिवर्तन हो रहा है और वहां उनके द्वारा खोज किये गये जीवाश्मों और मौजूदा प्रजातियों में क्या संबंध है? इस बात पर उन्होंने सिर्फ गौर ही नहीं किया, बल्कि काफी जीवंत और जीवाश्म के नमूने इकट्ठा किये।

1836 में इंग्लैंड लौटकर डार्विन अपनी यात्रा के नतीजे लिखने में जुट गये। साथ ही वे प्राणियों के परिवर्तन पर विभिन्न सूत्रों से सूचनाएं इकट्ठा करते रहे। प्रजाति की उत्पत्ति

(शेष पृष्ठ 4 पर)

डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत ..

(पृष्ठ 3 का शेष)

के संबंध में डार्विन ने 1842 के आस-पास अपने विचारों को लिपिबद्ध करना शुरू किया और 1844 में उन्होंने मोटे तौर पर एक पूर्ण मसौदा पेश किया। लेकिन उसके साक्ष्यों को इकट्ठा करने का काम 1856 तक चलता रहा। उन्होंने सोचा कि वे अपने मित्र भूवैज्ञानिक चार्ल्स लयेल (Charles Lyell) के उत्साह पर चार खंडों में अपना काम लिखेंगे। लेकिन इस काम के प्रारंभ होने के पहले ही मलय द्वीप समूह से अल्फ्रेड रसेल वालेस (Alfred Russel Wallace) ने उन्हें एक पांडुलिपि भेजी, जिसमें प्राकृतिक चयन के सिद्धांत की रूपरेखा थी। डार्विन ने पांडुलिपि की काफी तारीफ करते हुए वह लयेल को भेजी और जितना जल्द संभव हो सके, उसे प्रकाशित करने को कहा। लयेल और हुकार, जो डार्विन के काम से परिचित थे, ने सलाह दी कि वालेस की पांडुलिपि और अमेरिकी वैज्ञानिक ग्रे (Asa Gray) को लिखे उनके एक पत्र को एक साथ प्रकाशित किया जाये। 1858 में इनका प्रकाशन हुआ। पहले की योजना को रद्दकर डार्विन ने एक खंड में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'प्रजाति की उत्पत्ति' (Origin of Species) एक साल बाद 1859 में प्रकाशित की। इस पुस्तक के प्रकाशित होते ही चारों तरफ हलचल मच गयी। डार्विन पूरी तरह से वैज्ञानिक थे। वैज्ञानिक परीक्षण-निरीक्षण तथा वास्तविक साक्ष्यों को छोड़कर अन्य किसी मनगढंत सोच पर वे निर्भर नहीं करते थे। यही वजह है कि उन्होंने 1844 तक क्रमविकास संबंधी धारणा का मसौदा तैयार तो कर लिया, लेकिन उसे उसी वक्त प्रकाशित नहीं किया। उन्होंने वास्तविक साक्ष्यों के आधार पर उसकी जांच की। एक बार नहीं, बार-बार 12 सालों तक। यहां तक कि जब उन्हें पता चला कि अल्फ्रेड वालेस ने उन्हीं की तरह क्रमविकास की प्रक्रिया के तौर पर प्राकृतिक चयन की बात कही है, तब भी वे चिंतित नहीं हुए। उन्होंने उसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया। यहां उनकी उच्च वैज्ञानिक नैतिकता की झलक मिलती है।

जिन अवलोकनों और धारणाओं पर उन्होंने निर्भर किया था, वे अत्यंत सहज कुछ घटनाएं थीं और उनसे निकले कुछ सिद्धांतों द्वारा तैयार थीं। जैसे आसानी से देखा जा सकता है कि तमाम प्रजातियों में संतान उत्पादन की योग्यता उनकी मौजूदा आबादी को बरकरार रखने के लिए जो जरूरत है, उसके मुकाबले आश्चर्यजनक रूप से ज्यादा है। यदि यह उत्पादन की योग्यता पूरी तरह से लागू होती है, तो प्रजाति की आबादी ज्यामितीय श्रेणी (Geometric Progression) से बढ़ती जायेगी। यहां तक कि जिसे सबसे कम संतान पैदा करने वाला माना जाता है, उस हाथी की भी यदि बात की जाये, तो उसमें भी यह योग्यता है। डार्विन ने आकलन कर बताया था कि यदि एक जोड़े हाथी से शुरू किया जाये, तो 750 सालों में हाथियों की आबादी एक करोड़ नब्बे लाख हो जायेगी।

संतान उत्पादन की इतनी योग्यता रहने के बावजूद एक क्षेत्र में एक प्रजाति की आबादी मोटे तौर पर बराबर रहती है। समय के साथ उसमें बहुत ज्यादा वृद्धि या कमी नहीं होती है। हर साल कुछ कमी या बढ़ोतरी अवश्य होती है, लेकिन आम तौर पर आबादी में निरंतर वृद्धि नहीं होती है। पहले के दो अवलोकनों से जिस नतीजे पर आसानी से पहुंचा जा सकता है, वह है कि जन्म लेने वाली संतानों में सभी निश्चित तौर पर जिन्दा नहीं रह पातीं। जिन्दा रहने के संघर्ष में उनमें से अधिकांश वयस्क होने के पहले ही मर जाती हैं।

ऐसा होता क्यों है? इस सवाल पर सोचने के क्रम में डार्विन ने गौर किया कि किसी प्रजाति के दो जीव कभी भी बिल्कुल एक जैसे नहीं होते। हमेशा उनमें कुछ-न-कुछ अंतर रहता ही है, जिसे जीवविज्ञान की भाषा में विविधता (Variation) कहा जाता है। जीवों में विविधता का पाया जाना एक सर्वव्यापी घटना है।

इस अवलोकन से डार्विन इस नतीजे पर पहुंचे कि चूंकि दो जीवों की शारीरिक बनावट में कुछ-न-कुछ अंतर रहता है, इसलिए वातावरण के साथ मेल बैठाने की योग्यता में भी अंतर पाया जाता है। इसलिए कुछ जीव दूसरों के मुकाबले जीने में ज्यादा सक्षम होते हैं। इस घटना को अनुकूलन (Adaptation) कहा जाता है। इसलिए जिनमें अनुकूलन की योग्यता अधिक होती है, उनके लिए प्रजनन की स्थिति में जाने की संभावना भी अधिक होती है। वे ही जीवन-संघर्ष में विजयी होते हैं। और, यदि अनुकूलन की योग्यता के लक्षण वंशानुगत होते हैं, तो उनकी संतानों में भी ये लक्षण पाये जायेंगे। इसके फलस्वरूप अगली पीढ़ी में उस जीव की तादाद बढ़ेगी। इसलिए समय के साथ प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया इस तरह से किसी प्रजाति के लक्षणों को परिवर्तित करने में सक्षम होती है, जिसके नतीजतन क्रमविकास होता है।

तो एक बात साफ हो गयी कि समय के साथ-साथ प्रजातियों का क्रमविकास होता है। कुछ नयी प्रजातियों की पैदाइश होती है, तो कुछ प्रजातियां विलुप्त हो जाती हैं। फिर कुछ प्रजातियां नयी-नयी प्रजातियों में बंट जाती हैं। यानी एक ही पुरखे से विभिन्न प्रजातियों की पैदाइश होती है। यह प्रक्रिया हमेशा चलती रहती है। इसलिए डार्विन ने क्रमविकास की इस प्रक्रिया की तुलना पेड़ से की थी। जैसे पेड़ों में शाखाएं-प्रशाखाएं होती हैं, एक शाखा से अनेक शाखाएं निकलती हैं, क्रमविकास की प्रक्रिया भी वैसी ही है। एक ही पुरखे की प्रजाति से दो या उससे अधिक प्रजातियों की पैदाइश होती है।

डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत की खास विशेषता है साझे वंशज (Common Discendant) की अवधारणा, जिसने उन्हें अपने पुरखों से अलग किया था। उनके समय में या उसके पहले जिन लोगों ने क्रमविकास की बात भी कही थी, उन्होंने एक प्रजाति के दूसरे प्रजाति में रूपांतरण (Transformation) की बात कही थी। लेकिन उन्होंने साझे वंशज या साझे पूर्वज (Common Ancestor) की बात नहीं की।

आनुवांशिकी (Genetics) और डार्विनीय क्रमविकास का सिद्धांत

विज्ञान एक गतिशील प्रक्रिया है। नित्य नये आविष्कारों के जरिये कभी पुरानी सोच खारिज हो जाती है, तो कभी नयी खोजों के आलोक में पुराने सिद्धांत संशोधित होकर नये रूपों में प्रकट होते हैं। अनुवांशिकी की स्थापना के बाद डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत के क्षेत्र में दूसरी घटना घटी। अनुवांशिकी के जनक मेन्डेल जब अपना युगांतकारी शोध कर रहे थे और शोध का परिणाम प्रकाशित किया, वह और डार्विन का काल एक ही था। लेकिन मेन्डेल का शोध विज्ञान जगत में काफी दिनों तक अनजान रहा। सन् 1900 में कोरेन्स (Carl Correns), ह्यूगो दे व्रिज (Hugo de Vries) और वोन त्सेरमाक (Erich von Tschermak) ने मेन्डेल की अनुवांशिकी की पुनः खोज की। इसके पश्चात् डार्विनवाद को कुछ दिनों तक काफी हमलों का सामना करना पड़ा। 1902 में ह्यूगो दे व्रिज के उत्परिवर्तन (Mutation) के सिद्धांत के प्रकाशन के बाद प्राकृतिक चयन और निरंतर विविधता (Variation) की धारणा पर सवाल खड़े हुए। वोइनोथेरा (Oenothera) वंश के पौधों पर काम करने के दौरान ह्यूगो दे व्रिज को आकस्मिक उत्परिवर्तन का जो रूप देखने को मिला, उससे वे इस फैसले पर पहुंचे कि क्रमविकास सूक्ष्म उत्परिवर्तनों पर चयन के नतीजतन पैदा हुए बड़े उत्परिवर्तनों से होता है।

हालांकि आगे चलकर क्रमशः वैज्ञानिकों के लिए यह साफ होता गया कि डार्विनवाद और आनुवंशिकी (Genetics) में कोई विरोध तो है ही नहीं, वरन् आनुवंशिकी डार्विन के क्रमविकासवाद का मुख्य स्तंभ है। इसलिए जिस नये दृष्टिकोण से हमने क्रमविकास को देखना शुरू किया, उसे प्राकृतिक चयन की आनुवंशिकी या सूक्ष्म क्रमविकास का सिद्धांत (Micro Evolution) कहते हैं। मेन्डेल के समय में या उसके बाद जब मेन्डेल के सिद्धांत की पुनः खोज हुई, तब ऐसी धारणा थी कि किसी प्रजाति के आनुवंशिकी गुण अपरिवर्तनशील हैं। लेकिन सूक्ष्म क्रमविकास का विषय है प्रजाति के आनुवंशिकी गुणों के परिवर्तन या उत्परिवर्तन के फलस्वरूप किस तरह नये प्रकारों (Variations) की सृष्टि होती है और उसके जरिये किस तरह नयी प्रजाति की उत्पत्ति होती है। नयी प्रजाति की उत्पत्ति से लेकर क्रमविकास का नया दौर—जिसे स्थूल क्रमविकास (Macro Evolution) कहा जा सकता है।

क्रमविकास की प्रक्रिया

हमने पहले ही कहा है कि उत्परिवर्तन के नतीजतन जन समूहों में नये तरह के गुणसूत्रों या जीनों (Genes) का जन्म हो सकता है। उत्परिवर्तन की वजह से ही नये लक्षणों की सृष्टि होती है। इसलिए बेशक उत्परिवर्तन क्रमविकास की मुख्य संचालक शक्ति है। लेकिन सिर्फ उत्परिवर्तन के जरिये ही जीवों का क्रमविकास नहीं हो सकता।

प्राकृतिक चयन की वजह से क्रमविकास होता है। डार्विनवाद का यही मुख्य आधार है। लेकिन प्रजाति में नये जीनों का आगमन होना जरूरी है। ऐसा न होने पर चयन किस आधार पर होगा? डार्विन ने कहा था कि एक ही पीढ़ी की संतानों में भी लक्षणों की विविधता दिखती है। लेकिन इस विविता का मुख्य स्रोत क्या है? डार्विन के जमाने में इसकी जानकारी नहीं थी। अब हम जानते हैं कि उत्परिवर्तन ही विविधता का मुख्य स्रोत है। इसलिए कहा जा सकता है कि उत्परिवर्तन और प्राकृतिक चयन के मेल से ही क्रमविकास होता है। अब यह बात समझ में आ गयी है कि उत्परिवर्तन के नतीजतन स्वाभाविक तौर पर किसी प्रजाति में नये-नये लक्षणों वाले जीवों की पैदाइश होती है। लेकिन यदि वे लक्षण उसके अनुकूलन में मददगार नहीं होते हैं, तो प्राकृतिक चयन के जरिये वे विलुप्त हो जाते हैं। और यदि किसी अनुकूलन के अनुकूल लक्षणों की सृष्टि होती है, तो वह प्रजाति टिक जाती है और आने अगली पीढ़ी को जन्म देती है। इसी की वजह से प्रजाति के सामग्रिक आनुवंशिक गुणों में बदलाव आ सकते हैं। आज जन समूह के वंशानुगति के जरिये अनेक ताकतवर और संभावना वाले गणितीय सूत्रों का आविष्कार हुआ है। अब साफ तौर पर कहा जा सकता है कि कोई नव उत्परिवर्तित जीन जन समूह में स्थान प्राप्त करेगा या नहीं। यह कहा जा सकता है कि कौन-सा जीन तेज होगा और कौन-सा मंद। प्राकृतिक चयन की तीव्रता के साथ किसी जीन की विविधता का संबंध क्या होगा, इस संबंध में गणितीय प्रमेय साबित हो चुके हैं। आज इस सैद्धांतिक विज्ञान के जरिये यह साबित हो चुका है कि जीवों के लक्षणों पर जिस तरह वातावरण का प्रभाव काम करता है, उसी तरह उसकी जेनेटिक बनावट की भी महत्वपूर्ण भूमिका है।

पृथकीकरण (Differentiation) क्रमविकास की एक प्रमुख कार्यविधि है। नव उत्परिवर्तित जीव यदि अपनी प्रजाति के अन्य सदस्यों से अलग हो जाते हैं, तो क्रमविकास तेजी से हो सकता है। पृथकीकरण विभिन्न तरह से हो सकता है। मसलन भौगोलिक पृथकीकरण। प्राकृतिक आपदाओं की वजह से या अन्य किसी कारणवश एक खास प्रजाति दो हिस्सों में बंट जाती है। काफी समय बाद इन दोनों हिस्सों को एक ही प्रजाति के रूप में चिन्हित करना मुश्किल हो जाता है। उदाहरण के तौर पर आस्ट्रेलिया की बात की जा सकती है। यह भू-भाग दुनिया के अन्य हिस्सों से काफी समय से अलग-थलग है। इस वजह से यहां क्रमविकास ऐसे ढंग से हुआ है कि पूरी दुनिया में उसकी समानताएं ढूंढे नहीं मिलतीं। अफ्रीका और भारत-दोनों जगहों पर चीता, लकड़बग्घा, शेर, हाथी, गेंडा इत्यादि पाये जाते हैं। लेकिन उनकी शारीरिक बनावट अलग-अलग है। इससे समझा जा सकता है कि सुदूर अतीत में ये दोनों भू-भाग एक ही थे। एक समय अलग-थलग हो जाने की वजह से दोनों भू-भागों के जीवों का दो तरह से क्रमविकास हुआ। पृथकीकरण का सबसे तीव्र प्रकटीकरण तब होता है, जब प्रजनन संबंधी विभेद पैदा होता है। किसी प्रजाति के दो हिस्से काफी समय से अलग-थलग रहते हुए आपस में प्रजनन की योग्यता खो देते हैं। तब वे दो अलग-अलग प्रजाति बन जाते हैं।

अब तक की चर्चा से यह साफ है कि जीवों का क्रमविकास वास्तविक घटना है। सूर्य के चारों ओर पृथ्वी का परिक्रमण जितना सच है, यह भी उतना ही सच है। आज यह प्रमाणित है और इसके ऐतिहासिक साक्ष्य पृथ्वी की ऊपरी सतह के विभिन्न स्तरों में सुरक्षित हैं, जो कड़वी सच्चाई है और विज्ञान को मानने पर इसे नकारने की कोई गुंजाइश नहीं है।

क्या बंदर से ही हुई है मनुष्य की उत्पत्ति

सत्यपाल जी की तरह किसी-किसी ने डार्विन के समय के इस सवाल को उठाया है और जोर देकर कहा है कि ऐसा किसी कीमत पर नहीं हो सकता। मंत्री महोदय ने एक सच्ची बात कही है—किसी ने कभी भी किसी बंदर का आदमी बनते नहीं देखा है, यहां तक कि हमारे पुरखों ने भी नहीं। दरअसल डार्विन ने भी कहीं नहीं कहा है कि बंदर से ही मनुष्य की पैदाइश हुई है। डार्विन और क्रमविकास के सिद्धांत की मुख्य बात है—शुरू में पृथ्वी पर जीव नहीं थे। उसके बाद एक समय जीवों की उत्पत्ति हुई। जीवों के विकास और क्रमविकास की धारा में एक कोशिकीय तथा बाद में बहुकोशिकीय पौधों और प्राणियों की पैदाइश हुई। जीवों के क्रमविकास के रास्ते एक समय बंदर जैसे प्राणियों का आगमन हुआ। इन बंदर जैसे प्राणियों में से किसी-किसी प्रजाति से ही अलग-अलग समयों में बंदर, लंगूर, गोरिल्ला, चिपैंजी, ओरांगउटांग और मनुष्य की पैदाइश हुई।

इन बंदर जैसे प्राणियों को एक वृहद वर्ग प्राइमेट के अंतर्गत रखा गया है। मनुष्य भी प्राइमेट अंतर्गत प्राणी है। हाल में विलुप्त किसी प्रजाति से ही मनुष्य का क्रमविकास प्रारंभ हुआ था। आजकल विभिन्न जगहों पर जो बंदर दिखाई पड़ते हैं, वे मनुष्य के पूर्वज नहीं हैं। यहां तक गोरिल्ला, चिपैंजी आदि जिन्हें कपि (Ape) कहा जाता है। वे भी मनुष्य के पूर्वज नहीं हैं। इनमें से सभी अतीत के एक-एक प्राइमेट प्रजाति से क्रमविकास की धारा में आज की स्थिति में आ पहुंचे हैं। आधुनिक भाषा में कहा जा सकता है, ''मनुष्य बंदर से नहीं आया है, लेकिन मनुष्य और कपि का क्रमविकास किसी साझे प्राइमेट से ही हुआ है।'' वैज्ञानिकों ने मनुष्य के क्रमविकास की इसी तरह व्याख्या की है। लेकिन रसायनशास्त्र में पीएचडी डिग्रीधारी माननीय मंत्री महोदय में इस संबंध में ज्ञान की काफी कमी है।

सवाल है, बंदर जैसे प्राइमेट से मनुष्य की पैदाइश की जो रूपरेखा डार्विन ने पेश की थी, उसका आधार क्या था? डार्विन ने अपनी मशहूर पुस्तक 'डिसेंट ऑफ मैन' में इसका जवाब दिया है। हेकल के 'दि इवोल्युशन ऑफ मैन' पुस्तक में भी इसका जवाब मिलता है। इन पुस्तकों में जिन तर्कों को पेश किया गया है, वे इस प्रकार हैं: 1. एक दौर के प्रजातियों से अगले दौर के प्रजातियों तथा निम्न स्तर के प्राणियों से उच्च स्तर के प्राणियों की पैदाइश के साझे क्रमविकास के सिद्धांत को अगर मान लिया जाये, तो मनुष्य की उत्पत्ति के संबंध में भी उसे नकारा नहीं जा सकता।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

24 अप्रैल - देश भर में ...

(पृष्ठ 1 का शेष)

पटना : सभा को संबोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

की पार्टी की तर्ज पर एसयूसीआई (सी) गठित की, कैसे यह पार्टी पश्चिम बंगाल के दूर-दराज के इलाके से शुरू होकर अब देश के 24 राज्यों तक फैल गई है और पूरे भारतवर्ष में लोगों को पूंजीवादी शोषण और जुल्म के खिलाफ आंदोलनों में संगठित कर रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय कॉरपोरेट घरानों की मदद से सरकारी गद्दी पर काबिज हुई मौजूदा मोदी सरकार लोगों की मूलभूत सुविधाओं का भी व्यापक निजीकरण कर रही है। इसके चलते उनका जीवन दयनीय होता जा रहा है। उन्होंने दिखाया कि कैसे आरएसएस-बीजेपी की जोड़ी असल में संकटग्रस्त पूंजीवाद को बचाने के लिए जहां एक तरफ, कॉरपोरेट घरानों को आम आदमी की खुली लूट के तमाम अवसर मुहैया कराने में लगी हुई है, वहीं दूसरी तरफ, हिन्दू साम्प्रदायिक मानसिकता को भड़काने और सभी आधुनिक वैज्ञानिक विचारों को पीछे रखते हुए वेद और पुराणों के पुराने रूढ़िवादी मिथकों को सामने लाने का फासीवादी तौर-तरीका अपना रही है। इस वर्ष जनवरी में सुप्रीम कोर्ट के चार वरिष्ठ जजों द्वारा की गई प्रेस कांफ्रेंस का हवाला देते हुए कॉ. साहा ने बताया कि मोदी सरकार न्यायपालिका और प्रेस जैसे भारतीय बुर्जुआ राज्य के तमाम डेमोक्रेटिक संस्थानों की सापेक्ष स्वायत्तता को फासीवादी तरीके से तबाह करने पर आमादा है। कॉ. शिवदास घोष की शिक्षाओं का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में संकटग्रस्त पूंजीवाद का आखिरी संबल फासीवाद है और कहा कि पूंजीवादी दासता की तमाम समस्याओं का समाधान सिर्फ और सिर्फ पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति से ही हो सकता है। लेकिन क्रांति अपने आप नहीं हो जाएगी। उच्च नीति-नैतिकता और संस्कृति के आधार पर जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं को लेकर जोरदार जनआंदोलनों का निर्माण करने के माध्यम से क्रांति सफल करने की ऐसी अवस्था में पहुंचा जा सकता है। जैसे सामंतवाद के खिलाफ चौतरफा संघर्ष छेड़ कर ही समाज में पूंजीवाद का उदय हुआ था। इसी प्रकार मानव जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए एक नई समाजवादी संस्कृति, राजनीति और सामाजिक आर्थिक आंदोलन के आधार पर ही समाजवादी क्रांति सफल हो सकती है। उन्होंने लोगों से अपील की कि ऐसा एक आंदोलन खड़ा करने में पार्टी की मदद करें।

वडोदराः सभा को संबोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

बिहार (पटना) : ''देश आज गहरे संकट में है। यह संकट राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नीति-नैतिकता व मूल्यों तक व्याप्त है। नरेंद्र मोदी नेतृत्व वाली केन्द्र में सत्तासीन भाजपा सरकार जनता से किये वायदों को ताक पर रखकर अपने आकाओं- देश के एकाधिकार पूंजीपतियों के स्वार्थ में आमजन को तंगोतबाह करने वाले एक के बाद एक कदम उठा रही है। आजादी के 70 सालों बाद भी पूंजीवादी व्यवस्था कायम रहने के कारण बेरोजगारी, महंगाई, गरीबी, सांप्रदायिकता व जात-पात जैसी कैंसरनुमा समस्याएं विकराल रूप ले चुकी हैं। विभिन्न मदों में मिलने वाली सब्सिडी खत्म की जा रही है, श्रम अधिकारों में कटौती हो रही है। मानवीय मूल्यों में तीव्र गिरावट हो रही है। हर तरफ बच्चियों, युवतियों व महिलाओं का भयंकर चित्कार सुनाई दे रहा है। उग्र राष्ट्रवाद, मध्ययुगीनता और परंपरावाद को भड़काकर, वैज्ञानिक सोच को मारकर मानवता के घोर शत्रु फासीवाद को मजबूत करने की कोशिश की जा रही है। वे मिथकों, काल्पनिक और दंतकथाओं को इतिहास तथा विज्ञान के तौर पर प्रचारित कर रहे हैं। वे लोगों की वैज्ञानिक और तार्किक मानसिकता को बर्बाद कर उनमें अंधविश्वास व अतार्किक रुझान पैदा कर रहे हैं। इतना ही नहीं, वे लोगों में फूट डालने के लिए धार्मिक-जातिगत व नस्लीय झगड़े-फसादों और दंगों को उकसावा दे रहे हैं। धर्मनिरपेक्षता को रौंदा जा रहा है।''

उक्त बातें एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की स्थापना की 70वीं वर्षगांठ पर 25 अप्रैल को पटना के आईएमए हाल में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए पार्टी के केन्द्रीय कमिटी सदस्य कॉ. सत्यवान ने कही। उन्होंने आगे कहा कि देश में अंग्रेजी शासन की समाप्ति तो हुई, लेकिन, किसान-मजदूर सहित

रोहतक : सभा को संबोधित करते हुए कॉ. शंकर साहा

मध्यमवर्गीय जनता पर हो रहे शोषण-उत्पीड़न का खात्मा नहीं हुआ, शोषित मेहनतकश अवाम की मुक्ति नहीं हुई। कॉ. सत्यवान ने बताया कि एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के संस्थापक नेता कॉमरेड शिवदास घोष के क्रांतिकारी विचारों की रोशनी में मार्क्सवाद-लेनिनवाद के आधार पर पूंजीपति वर्ग के शोषण-शासन के खिलाफ सर्वव्यापी संघर्ष छेड़ने के अलावा जनमुक्ति के सपनों को साकार करने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है। इसी रास्ते बुनियादी एकता और भाईचारे की भी रक्षा की जा सकती है। उन्होंने इस मौके पर सभी पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि इस ऐतिहासिक जवाबदेही को निभाने के लिए खुद को वैचारिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक और सांगठनिक रूप से सशक्त और सक्षम बनने का संकल्प लें।

जनसभा के अध्यक्ष एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के बिहार राज्य सचिव कॉ. अरूण कुमार सिंह ने कहा कि बिहार में सामाजिक न्याय और सुशासन का राग अलापने वाली जदयू-भाजपा की एनडीए सरकार केन्द्र द्वारा लागू की जा रही जन विरोधी नीतियों का ही अनुसरण कर रही है। हाल में बिजली दर में की गई बेतहाशा वृद्धि ने बदहाली में जी रही प्रदेश की आम जनता के जीवन को तबाह कर दिया है। राज्य के लोग शिक्षा और स्वास्थ्य से महरूम हैं। इसके साथ ही ठेके पर बहाली, श्रम कानूनों का घोर उल्लंघन तथा मजदूर-कर्मचारियों के जायज मांगों की अनसुनी की जा रही है।

हरियाणा (रोहतक) : ''हमारे देश समेत सभी पूंजीवादी देशों में व्याप्त महंगाई, बेरोजगारी, गरीबी, भेदभाव, दमन-उत्पीड़न व युद्ध जैसी कैंसरनुमा समस्याओं और बुराइयों से मुक्ति के लिए जन आंदोलन ही एकमात्र रास्ता है। इसी रास्ते लोगों की बुनियादी एकता व भाईचारे की रक्षा की जा सकती है और क्रांतिकारी बदलाव के माध्यम से समाज व देश को एक नए उन्नत धरातल पर ले जाना संभव है। कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों की रोशनी में आज मार्क्सवाद व समाजवाद ही मानव समाज को राह दिखाने में सक्षम है।'' ये उद्गार 24 अप्रैल को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के 70वें स्थापना दिवस पर छोटूराम पार्क, रोहतक के बड़े सभागार में आयोजित राज्य स्तरीय जनसभा में पार्टी के नेताओं ने व्यक्त किए। प्रदेश भर से पार्टी के नेता व कार्यकर्ताओं ने पार्टी स्थापना दिवस पर स्वयं को वैचारिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक व सांगठनिक रूप से सशक्त व सक्षम बनाने का संकल्प तरोताजा किया। इस अवसर पर एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) की केंद्रीय कमेटी के सदस्य एवं श्रमिक संगठन - एआईयूटीयूसी के महासचिव कॉमरेड शंकर साहा मुख्य वक्ता रहे और अध्यक्षता पार्टी के हरियाणा राज्य सचिव व केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड सत्यवान ने की।

कॉ. सत्यवान ने कहा कि वर्तमान में पूंजीवादी व्यवस्था घोर-मुनाफाखोरी में लिप्त है। मानवीय मूल्यों, जनतंत्र व धर्मनिरपेक्षता को रौंदकर वह मानव जाति के घोर शत्रु फासीवाद को पनपा रही है। विश्व पैमाने पर पूंजीवाद-साम्राज्यवाद खूंखार अपराधी की तरह दिनोंदिन महादैत्य के रूप में प्रकट हो रहा है। देश के बड़े उद्योगपति-पूंजीपति श्रम अधिकारों में कटौती कर मजदूरों-कर्मचारियों का भयंकर दमन कर रहे हैं। रोजगार, स्थाई-नौकरी, उचित वेतन-मजदूरी व पेंशन के अधिकारों को प्रायः समाप्त कर दिया गया है। कृषि भूमि व वन भूमि को भूमाफियाओं-सौदागरों के हवाले करने का सिलसिला थमा नहीं है। बड़े पूंजीपतियों-कारपोरेट घरानों को भारी टैक्स छूट के साथ उनके अरबों-खरबों के कर्ज माफ हो रहे हैं परंतु कर्ज के बदले गरीब किसानों की जमीनों की कुर्की हो रही है। उनकी फसलों को औने-पौने दामों पर लूट कर उन्हें आत्महत्या करने के लिए विवश किया जा रहा है। बच्चियों, युवतियों व महिलाओं की भीषण चित्कार हर जगह सुनायी दे रहा है। पूंजीपति विज्ञान के तकनीकी पहलू का इस्तेमाल कर मशीनों से भरपूर मुनाफा लूट रहे हैं और खतरनाक अस्त्र शस्त्र बना रहे हैं। परंतु विज्ञान की आत्मा-उसकी तर्कशक्ति व परख शक्ति को मार रहे हैं जबकि व्यक्ति और मानव समाज की उन्नति एकमात्र वैज्ञानिक तार्किकता पर निर्भर करती है।

आजादी के बाद से ही पूंजीवादी व्यवस्था और इसकी सेवादार पार्टियों की सरकारें देश-प्रदेश में लगातार इलाकावाद, जातिवाद, सांप्रदायिकता, आपसी बैरभाव व कलह को पनपा व फैला रही हैं। देश के 101 पिछड़े जिलों में मेवात का सबसे पिछड़ा रहना और एसवाईएल नहर जैसी समस्याओं का लटके रहना इसकी स्पष्ट बानगी हैं।

प्रेमचंद व शरतचंद्र जैसे साहित्यकारों, राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा राव फुले सरीखे महापुरुषों और भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, बिस्मिल, अशफाक जैसे क्रांतिकारी शहीदों व नेताजी सुभाष जैसे हमारे राष्ट्रीय आजादी आन्दोलन के नेताओं को सरकार द्वारा भुलाया जा रहा है। सामंती, पुरातनपंथी, दकियानूसी, रुढ़िवादी विचारों, मिथकों व अंधविश्वासों को उकसाया-फैलाया जा रहा है। व्यक्ति स्वतंत्रता, जनतांत्रिक अधिकारों, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और नारी-पुरुष समानता के विपरीत एक ऐसा ताना-बाना बुना और रचा जा रहा है जहां

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मुम्बईः सभा को संबोधित करते हुए कॉ. द्वारिकानाथ रथ

6 R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2015-2017
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 Fortnightly

डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत पर ...

(पृष्ठ 3 का शेष)

2. शारीरिक बनावट में समानता संबंधी जिस सिद्धांत को क्रमविकास की विचार पद्धति के तौर पर माना जाता है, उसे यदि बंदर, गोरिल्ला, चिंपैंजी, ओरांगओटांग और मनुष्य के लिए प्रयोग किया जाये, तो अनेक खास तरह की समानताएं नजर आती हैं। एक अध्ययन में देखा गया है कि ओरांगओटांग की 56, बंदर की 84, गोरिल्ला की 87 और चिंपैंजी की 98 विशेषताओं का मनुष्य के साथ मेल है। आधुनिक अणुजैविकी (Molecular Biology) के आलोक में देखा जा रहा है कि डीएनए के आधार पर विचार करने पर गोरिल्ला और चिंपैंजी के साथ मनुष्य की करीब 98 फीसदी समानताएं हैं।

3. मनुष्य के साथ इन कपियों (Apes) या वनमानुषों के खून की संरचना और ग्रुपों के प्रकार तथा तुलना करने वाले अन्य अंगों-प्रत्यंगों या पेशियों की बनावट में जो समानताएं पायी जाती हैं, उसे भी नकारा नहीं जा सकता।

4. जीवनचक्र, प्रजनन, माहवारी, गर्भधारण की अवधि, उम्र की अवधि, बच्चों के लालन-पालन, बीमारियों के प्रकार आदि में भी मनुष्य के साथ इनकी काफी समानताएं हैं।

5. भ्रूणावस्था की शुरुआत में इनमें अंतर समझ पाना कठिन है। नवजात बंदर या वनमानुष के बच्चे में काफी मेल रहता है।

इन सारी बातों के आधार पर क्रमविकासवादियों ने कहा था कि इन समानताओं से यह आसानी से कहा जा सकता है कि यह इनके जैविक और परम्परागत तौर पर किसी एक साझे पूर्वज से अलग-अलग धाराओं में क्रमविकास के रास्ते आगे बढ़ने के साक्ष्य हैं। इसके अलावा दूसरे ढंग से इनकी व्याख्या नहीं की जा सकती। सही तरीके से खोज-बीन करने पर ऐसे कुछ जीवाश्मों का निश्चित तौर पर पता चलेगा जो मनुष्य के करीब हैं और आज के वनमानुष की तुलना में विकसित थे, लेकिन आधुनिक मनुष्य की तुलना में पिछड़े हुए थे।

खोज-बीन शुरू भी हो गयी। सचमुच ऐसे विलुप्त हो चुके जीव का जीवाश्म प्राप्त हुआ, जिसके आधार पर सटीक तौर पर कहना संभव हुआ कि बंदर जैसे जीवों के क्रमविकास से आधुनिक मनुष्य यानी होमोसेपिएन्स का आगमन हुआ है। इसलिए मनुष्य के क्रमविकास के संबंध में आज किसी तरह का कोई रहस्य नहीं रहा।

यह हमला क्यों

सत्यपाल सिंह ही पहले व्यक्ति नहीं हैं। 'प्रजाति की उत्पत्ति' के प्रकाशन के बाद से ही यह हमला शुरू हुआ है। विभिन्न समयों में भिन्न-भिन्न ओर से हमले हुए हैं। सूर्य के चारों ओर पृथ्वी के परिभ्रमण संबंधी कोपरनिकस के सिद्धांत को यदि छोड़ दिया जाये, तो दूसरा कोई सिद्धांत ऐसे तेज हमले का शिकार नहीं हुआ है। खास तौर पर हमला हुआ बाइबिलपंथियों की ओर से। विश्व ब्रह्मांड की रचना ईश्वर ने की है और उसकी श्रेष्ठ रचना है मनुष्य। यह विश्वास तमाम धर्मग्रंथों की मुख्य प्रतिस्थापना है। डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत ने यहीं चोट की है।

ईश्वर की श्रेष्ठ रचना मनुष्य का निवास इस पृथ्वी पर है। इसलिए पृथ्वी ब्रह्मांड का केन्द्र न हो, ऐसा हो ही नहीं सकता। शासक वर्ग द्वारा प्रचारित इस सोच पर जिस तरह कोपरनिकस और गैलिलिओ का सूर्यकेन्द्रिक ब्रह्मांड की सोच ने काफी चोट की, उसी तरह डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत ने जीवों के क्रमविकास के प्राकृतिक नियम की खोज कर मनुष्य की सृष्टि के पीछे अतिप्राकृतिक शक्ति की भूमिका को नकार दिया।

इतने दिनों तक जो रहस्य बना हुआ था, डार्विन ने उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। उन्होंने साबित कर दिया कि निर्जीव वस्तुओं की तरह सजीवों का परिवर्तन भी सुनिर्दिष्ट प्राकृतिक नियमों से होता है। वस्तु के बाहर की किसी शक्ति पर निर्भर न कर उन्होंने पूरी तरह से प्रकृति के अपने नियमों पर ही निर्भर किया था।

पृथ्वी को इस ब्रह्मांड का केन्द्र न माने जाने पर भी सनातनपंथियों को इस बात की तसल्ली थी कि कम से कम मनुष्य तो ईश्वर की अनुपम सृष्टि है। डार्विन की खोज ने यहां भी चोट पहुंचायी। इस चोट से धार्मिक सिद्धांतों का काफी कुछ तहस-नहस हो गया। प्रजातियों का स्थायित्व और बाइबिल की सृष्टि का सिद्धांत और सृष्टि के घोषित कारण रद्द हो गये। यह कट्टर धर्म-विश्वासियों के लिए एक शोक की लहर थी। क्योंकि इससे ईश्वर की अनुकम्पा के सैकड़ों तर्क बेकार हो गये। धार्मिक सिद्धांतकारों के लिए सबसे नुकसानदायक बात डार्विन का वह एलान था, जिसमें उन्होंने कहा था—निम्न स्तर के प्राणियों से मनुष्य का आर्विभाव हुआ है। धार्मिक सिद्धांतकारों ने इस सिद्धांत के एक पहलू पर जोर देकर उसका प्रचार किया। वह है, 'डार्विन ने कहा है कि मनुष्य की पैदाइश बंदर से हुई है।' इस बात से पूरी दुनिया भौचक रह गयी। व्यंग्य में कहा जाने लगा कि ऐसा डार्विन का मानना है, क्योंकि वे बंदर जैसे दिखते हैं।' 'प्रजाति की उत्पत्ति' पुस्तक के प्रकाशन के एक साल बाद 1860 में ब्रिटिश एसोसिएशन में विशप विलवरफोर्स ने एक बहस में डार्विनपंथी हक्सले पर हमला करते हुए कहा, ''किस ओर से बंदर से आपका जन्म हुआ है, मां की ओर से या बाप की ओर से?' सिर्फ कैथोलिक वाले ही नहीं, प्रोटेस्टेन्ट वाले भी डार्विन का विरोध करने लगे। आज भी संयुक्त राज्य अमेरिका के कई राज्यों में डार्विन के क्रमविकास के सिद्धांत को पढ़ाने की मनाही है। उस देश के टेनेसी राज्य के कुछ लोगों की इज्जत पर इतनी चोट पहुंची कि उन्होंने एक स्कूल के एक जीवविज्ञान के शिक्षक के खिलाफ मुकदमा दायर कर दिया, क्योंकि उन्होंने बच्चों को बाइबिल के सिद्धांत की बजाय डार्विन का सिद्धांत पढ़ाया था। उन पर 100 डॉलर का जुर्माना हुआ था। धार्मिक कुपमंडुकता के आधुनिक झंडाबरदार और उनके प्रतिनिधि भाजपा के माननीय मंत्री महोदय इन्हीं के यार हैं। क्योंकि धार्मिक सोच और धार्मिक उन्माद न होने पर इनका काम चलने वाला नहीं है। इसलिए सिर्फ डार्विन ही नहीं, आचार्य जगदीशचन्द्र बोस भी इनके हमले के शिकार हैं।

आधुनिक विज्ञान के अनुसंधान में नहीं, उनकी सोच पुरानी दकियानूसी कुपमंडूकता में फंसी हुई है। हमेशा ही शासक वर्ग की यही चाहत रही है कि वह आदमी की सोच पर अंधता का पर्दा डाल दे। हमारे देश के शासक भी इसके अपवाद नहीं हैं। हमें अभी ही जागरूक होना होगा, विरोध में आवाज उठानी होगी। ऐसा न होने पर लम्बे संघर्ष के जरिये हमने जो कुछ हासिल किया है, उसे गंवा देंगे। इस बार की घटना में हमने यही बात गौर की। सत्यपाल सिंह की टिप्पणी के खिलाफ देश भर में वैज्ञानिक हलकों तथा आम लोगों के बीच से जो प्रबल जनमत तैयार हुआ है, उसके दबाव में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर खुलेआम स्वीकार करने को मजबूर हुए हैं कि उनके डिप्टी की टिप्पणी गलत है। उन्होंने कहा है कि उनके मंत्रालय की इस संबंध में किसी तरह के राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की योजना नहीं है। यह आंदोलन की एक जीत है। विरोध के दबाव में सरकार भले पीछे हट गयी, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वह फिर ऐसे हमले नहीं करेगी। अत: भाजपा और संघ परिवार के इस तरह के विज्ञान विरोधी कदमों के खिलाफ आम अवाम को हमेशा जागरूक करते रहना होगा।

24 अप्रैल - देश भर में ...

(पृष्ठ 5 का शेष)

प्रेस की आजादी, न्यायपालिका की निष्पक्षता, धर्मनिरपेक्षता, धार्मिक स्वतंत्रता खतरे में है। दलितों, अल्पसंख्यकों व गरीबों को दबाया और कुचला जा रहा है।

जनसभा में इन हमलों व फूटपरस्ती के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन खड़ा करने का आह्वान किया गया। पार्टी के संस्थापक महासचिव एवं महान मार्क्सवादी चिंतक कॉमरेड शिवदास घोष के क्रांतिकारी विचारों व अनूठे संघर्षों की ठोस जमीन पर बनी एसयूसीआई (सी) को मजबूत बनाने का संकल्प लिया गया। जनसभा को राज्य कमेटी सदस्यों, कॉमरेड अनूप सिंह, कॉमरेड राजेंद्र सिंह व कॉमरेड रामफल ने भी संबोधित किया।

मध्य प्रदेश (भोपाल) :

भारत में मेहनतकश वर्ग के हितों के लिए संघर्षरत एसयूसीआई (सी) ने 27 अप्रैल को स्थानीय नीलम पार्क में अपना 70वां स्थापना दिवस राज्य स्तरीय सभा करके मनाया। इसमें राज्यभर से आये पार्टी कार्यकर्ताओं और समर्थकों ने सैकड़ों की संख्या में उत्साहपूर्वक भागीदारी की।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एसयूसीआई (सी) के झारखंड राज्य सचिव कॉ. रॉबिन समाजपति ने सभा को संबोधित करते हुए देश की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति का विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि देश की सत्ता पर काबिज पूंजीपति वर्ग की ताबेदार भाजपा सरकार पूंजीपति वर्ग को आर्थिक संकट से उबारने के लिए मंदी का पूरा भार आम जनता पर डाल रही है। सेवा क्षेत्र के निजीकरण, रक्षा और दवाइयों जैसे क्षेत्रों में 100% एफडीआई, नोटबन्दी, जीएसटी, एफआरडीआई और किसान-विरोधी कृषि नीतियों, श्रम अधिकारों में कटौती जैसी कहर ढाने वाली जनविरोधी नीतियों को जनता के विरोध के बाद भी जारी रखे हुए है। आंदोलन को तोड़ने के लिए धर्म व जाति के नाम पर कट्टरता पनपाकर रेजीमेंटेड फोर्स तैयार की जा रही है जो आंदोलनों को कुचल सके और जो इतनी संवेदनहीन होगी कि उसे हत्या व दुष्कर्म सहित तमाम अमानवीय कृत्य करने में कोई हिचक नहीं होगी। पूंजीवाद-साम्राज्यवाद अपने अंतिम हथियार फासीवाद को लाकर दुनिया को युद्ध में धकेल रहा है। भारत का शासक वर्ग भी भारत की आम जनता को महंगाई, बेरोजगारी, भुखमरी, भ्रष्टाचार, अमानवीय अपराधों आदि में धकेलकर सत्ता पर काबिज रहने के लिए आमादा है। उन्होंने इसके खिलाफ देशभर में जनवादी प्रगतिशील ताकतों के नेतृत्व में जबरदस्त आंदोलन खड़ा करने की अपील की ताकि एक ऐसा समाज निर्मित हो जिसमें मानव द्वारा मानव का शोषण न हो।

उन्होंने कहा कि 1917 की रूस की पहली सफल समाजवादी क्रांति ने महंगाई, बेरोजगारी को पूरी तरह से खत्म करके आर्थिक समस्याओं से पूरी तरह से निजात दिलाई थी। हमें मार्क्सवाद-लेनिनवाद -शिवदास घोष चिंतन को जन-जन तक ले जाना है और समाजवाद की ओर आगे बढ़ना है।

एसयूसीआई(सी) के म.प्र. राज्य कमेटी सचिव कॉ. प्रताप सामल ने बताया कि तमाम अन्य पार्टियां बुर्जुआ वर्ग के हित की रक्षा कर रही हैं। जनता को अपने वर्ग की सही पार्टी को पहचान कर उसे मजबूत करना होगा।

सभा की अध्यक्षता पार्टी के राज्य कमिटी सदस्य कॉ. लोकेश शर्मा ने की।

मुंबई : एसयूसीआई (सी) की मुंबई सांगठनिक कमेटी की ओर से पार्टी स्थापना दिवस महात्मा फूले व्यायामशाला हाल, चिंचपोकलीं (पश्चिम), मुंबई, महाराष्ट्र में 28 अप्रैल को मनाया गया। मुंबई सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉ. अनिल त्यागी ने सभा की अध्यक्षता की।

मुख्य वक्ता पार्टी के गुजरात राज्य सचिव कॉ. द्वारिका नाथ रथ थे। मुंबई सांगठनिक कमेटी के सदस्यगण कॉ. जयराम विश्वकर्मा और कॉ. योगेंद्र कुमार कुलश्रेष्ठ ने भी सभा को संबोधित किया।

भोपाल: सभा को संबोधित करते हुए कॉ. रोबिन समाजपति

जयपुर: पार्टी स्थापना दिवस के अवसर पर 29 अप्रैल को आयोजित सभा का एक दृश्य

कॉ. प्रभास घोष का भाषण

(पृष्ठ 2 का शेष)

बहुत पहले ही उन्हें चेतावनी दी थी कि आप वामपंथ को बर्बाद कर रहे हैं। इसका फायदा उठाएगा जनसंघ। तब जो जनसंघ था, आज उसका नाम भाजपा है। हुआ भी ऐसा ही। आज तृणमूल कांग्रेस जो आतंक मचाये हुए है, सरकार में रहने के दौरान सीपीआई(एम) ने उसकी जमीन भी तैयार कर दी थी। यही वजह है कि जनता कह रही है कि सीपीआई(एम) ने भी किया है, आज तृणमूल कांग्रेस भी कर रही है। जनता आंकड़े जुटा रही है कि किसने ज्यादा किया है, कौन कम कर रहा है। अब सीपीआई(एम) भाजपा विरोध के नाम पर कांग्रेस के साथ गठजोड़ कर रही है। यह तो अवसरवाद है। क्या कांग्रेस धर्मनिरपेक्ष है? कांग्रेस कभी भी धर्मनिरपेक्ष नहीं रही। 'धर्मनिरपेक्ष' का मतलब है दार्शनिक तौर पर आध्यात्मवाद नहीं रहेगा। यह पार्थिव दुनिया ही एकमात्र सच्चाई है। इसके प्रतिनिधि थे ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, शरत्चन्द्र, भगत सिंह। राजनैतिक क्षेत्र में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है राजनीति में, अर्थव्यवस्था में, शिक्षा में, सामाजिक क्षेत्र में धर्म की कोई भूमिका नहीं होगी। धर्म निजी विश्वास का मामला होगा। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने ऐसा ही कहा था। कांग्रेस ने कभी भी ऐसी राजनीति पर अमल नहीं किया। कांग्रेस ने भी तो साम्प्रदायिक दंगे भड़काये। अंतिम बार उसने दिल्ली में सिखों के खिलाफ दंगे करवाये। कांग्रेस कभी भी सेक्युलर नहीं रही। आज वोट के लिए कांग्रेस क्या कर रही है? वह भाजपा के साथ प्रतिस्पर्द्धा कर मंदिरों में जा रही है, मस्जिदों में जा रही है, गिरजाघरों में जा रही है। एक बात चल पड़ी है–कांग्रेस का नरम हिन्दुत्व। इस कांग्रेस को सीपीआई(एम) धर्मनिरपेक्ष बता रही है। कई प्रांतीयतावादी, जात-पांत पर आधारित पार्टियों बसपा, सपा, राजद, डीएमके आदि को, जिनके साथ धर्मनिरपेक्षता का कोई रिश्ता नहीं है और जिनका एकमात्र लक्ष्य सत्ता में जाना है, उन्हें वह धर्मनिरपेक्ष जनवादी ताकतें कह रही है। हालांकि मौजूदा स्थिति में एक बड़ा मौका था। आज कारपोरेट सेक्टर में ही लड़ाई चल रही है, एकाधिकार पूंजीपतियों के बीच आपस में लड़ाई चल रही है। नतीजतन, इनका एक तबका भाजपा को समर्थन दे रहा है, तो दूसरा कांग्रेस को। राष्ट्रीय पूंजी के साथ क्षेत्रीय पूंजी का द्वन्द्व चल रहा है, जिसका प्रतिबिम्बन राजनैतिक क्षेत्र में भी हो रहा है। इसलिए शासक वर्ग और उसकी पार्टियों में जब टकराहटें तेज हो गयी हैं, दुश्मन के खेमे के इस द्वन्द्व का इस्तेमाल कर किस तरह वर्ग संघर्ष और जन आंदोलन तेज किया जाये; यह तय करना ही सही वामपंथ का कार्यभार था। इस रास्ते का परित्याग कर सिर्फ चुनावी फायदे के लिए भाजपा विरोध के नाम पर आज कांग्रेस और इन प्रांतीयतावादी-जातिवादी पार्टियों के साथ सीपीआई(एम) गठजोड़ कर रही है। इसके साथ वामपंथ का कोई रिश्ता नहीं है। इस स्थिति में हमारी पार्टी महान मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचार को लेकर चल रही है, वामपंथ के परचम को बुलंद कर रही है। आज हम पर अंतर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय फलक पर अत्यंत ऐतिहासिक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी आ पड़ी है।

यहां कुछ और बातें मैं कॉमरेडों के लिए कहूंगा। कॉमरेड शिवदास घोष को हमारे सभी कॉमरेड काफी श्रद्धा करते हैं। मैं जानता हूं कि नेता-कार्यकर्ता मृत्यु के पहले तक कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों को याद रखेंगे। वे पार्टी हित के लिए संकल्पित हैं। लेकिन जिन सवालों पर सोचने की जरूरत है, वे हैं–हमारे अनेक कार्यकर्ता और नेता हैं, जिन्होंने अभी तक निजी सम्पत्ति का त्याग नहीं किया है। ऐसे भी अनेक नेता-कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने निजी सम्पत्ति का त्याग कर दिया है, लेकिन जिस चीज का वे त्याग नहीं कर पाये हैं, जिसका त्याग करने के लिए कठिन संघर्ष की जरूरत है, जिसे कॉमरेड शिवदास घोष ने ही मार्क्सवादी आंदोलन में पहली बार उठाया, वह है कि अगर आप सर्वहारा संस्कृति हासिल करना चाहते हैं, तो निजी सम्पत्तिजनित मानसिकता तथा व्यक्तिवाद से मुक्त होना होगा। उन्होंने कहा था कि व्यक्तिवाद बुर्जुआ जनतांत्रिक क्रांति के जमाने में प्रगतिशील था, जो धर्मनिरपेक्ष मानवतावाद लाया था। आज पूंजीवाद के घोर गिरावट के दौर में उस व्यक्तिवाद ने घोर व्यक्ति केन्द्रिकता तथा नैतिक मान में तीव्र गिरावट पैदा कर दी है। ऐसी स्थिति में हम जिस माहौल में जी रहे हैं, यहां व्यक्तिवाद हमारे अंदर काम करता है। राजनैतिक क्षेत्र में हम कॉमरेड शिवदास घोष की सीखों को मोटे तौर पर समझते हैं, हम उन पर अमल करते हैं। लेकिन हमारी आदतों में, हमारे व्यवहार में, हमारे जीवन में, हमारे पारस्परिक संबंधों में बड़े ही सूक्ष्म रूप में बुर्जुआ व्यक्तिवाद काम करता है, यहां तक कि हर क्षण काम करता है–इस संबंध में अधिकांश नेता और कार्यकर्ता सचेत नहीं हैं, अवगत नहीं हैं।

हम चिंतन करते हैं, सोचते हैं। हम मानते हैं कि यह सही है, वह गलत है, क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिए, यह अच्छा है, वह अच्छा नहीं है, ऐसा, वैसा आदि। यह सोच यानी हम जिस चिंतन प्रक्रिया से काम करते हैं, क्या वह मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचार द्वारा निर्धारित चिंतन प्रक्रिया है? हममें से कितने लोग कॉमरेड शिवदास घोष की चिंतन प्रक्रिया को हासिल करने के संघर्ष में संलिप्त हैं? हम लोगों ने परम्परागत तौर पर जिस विचार को समाज से बचपन में पाया है, वह बुर्जुआ दृष्टिकोण है, बुर्जुआ विचारधारा है। वह हमारे खून-मज्जे में मिला हुआ है। उससे मुक्त होने के लिए निरंतर संघर्ष की जरूरत है। यहां तक कि इसके लिए हमें मार्क्सवाद को ही, द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को ही दार्शनिक तौर पर अपनाना होगा। यह चलायमान जीवन, गतिशील जीवन हर क्षण परिवर्तित हो रहा है। यह गति का नियम क्या है, इसका अंदरूनी द्वन्द्व क्या है, बाहरी द्वन्द्व क्या है, बाहरी द्वन्द्व में कौन-सा मुख्य है, मात्रात्मक परिवर्तन क्या है, गुणात्मक परिवर्तन क्या है, किसका विनाश होकर नये का निर्माण होता है–ये सारी बातें प्राकृतिक जगत की तरह समाज में भी काम करती हैं, परिवेश में भी काम करती हैं, किसी व्यक्ति में काम करती हैं, किसी कॉमरेड में काम करती हैं, किसी नेता में काम करती हैं–इसके विचार के मामले में इस मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अपनाना होगा। अपने को पूरी तरह से जज्बातों से मुक्त रखते हुए, विद्वेष की भावना से मुक्त रखते हुए, मनगढ़ंत सोच से मुक्त रखते हुए हमें विचार करने की जरूरत है। यह योग्यता आज भी अधिकांश नेता-कार्यकर्ता हासिल नहीं कर पाये हैं। इसे हासिल करने के लिए एक ही साथ वैचारिक और व्यवहारिक संघर्ष की जरूरत है। उन्नत सर्वहारा संस्कृति हासिल करते हुए इन दोनों संघर्षों की शिक्षा को द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया में अपनाना होगा। अगर इसे हासिल नहीं किया गया, तो पार्टी में द्वन्द्वात्मक संबंध निर्मित नहीं होगा। द्वन्द्वात्मक संबंध की बजाय कुछ बातें हो जायेंगी, कुछ काम भी हो जायेंगे, विचारों का आदान-प्रदान हो जायेगा, कुछ तर्क-बहस हो जायेगा। द्वन्द्वात्मक प्रक्रिया के आधार पर निर्मित द्वन्द्वात्मक संबंध, विकसित मान, सांस्कृतिक मान के आधार पर द्वन्द्वात्मक संबंध पार्टी में निर्मित नहीं होगा। अगर इसका निर्माण नहीं हो, तो पार्टी में जनवादी केन्द्रीयता सही तरीके से काम नहीं करेगी। इसका निर्माण नहीं होने से या तो नेतृत्व के प्रति अंध समर्थन या फिर अंध विरोध की मानसिकता तैयार होगी। नेतृत्व अफसरशाही हो जायेगा। विभिन्न स्तरों पर ये सारी चीजें परिलक्षित होंगी। नेता-कार्यकर्ताओं में नाम कमाने की रुझान, घमंड, अहंकार, खुद को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाने की प्रवृत्ति, दूसरों से द्वेष-विद्वेष तथा खटास की भावना आदि भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकट होने की कोशिश करेंगी। इनके खिलाफ निरंतर संघर्ष की जरूरत है। पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन, प्यार-मुहब्बत, बच्चे के प्रति नजरिया–इन तमाम मामलों में भी सर्वहारा संस्कृति का जो दृष्टिकोण होना चाहिए, वह दृष्टिकोण यदि हासिल नहीं किया गया, तो हममें से कोई भी उन्नत कम्युनिस्ट का स्तर हासिल नहीं कर पायेगा। कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि एक समय बुर्जुआ मानवतावाद प्रगतिशील था, उसी को आधार बनाकर दुनिया में नवजागरण के जमाने में, बुर्जुआ जनवादी क्रांति के जमाने में उन्नत चरित्रों का निर्माण हुआ था। हमारे देश में नवजागरण के, आजादी आंदोलन के नेता भी उसी स्तर में थे। उस जमाने का जो मानवतावादी स्तर था, अभी हमने उस स्तर को लेकर भी शुरू नहीं किया है। इसी वजह से कॉमरेड शिवदास घोष ने हम लोगों से शरत् साहित्य पढ़ने, महापुरुषों की जीवनियां पढ़ने तथा उनकी जीवनियों से सीख लेने को कहा था। उन्होंने इन सीखों के जरिये मानवतावादी चरित्र व मूल्य हासिल करने को कहा था। इसकी मुख्य बात है–क्रांति का हित मुख्य है, पार्टी का हित मुख्य है, व्यक्ति का हित गौण है। इसके बाद का स्तर है–क्रांति का हित ही हमारा हित है, पार्टी का हित ही हमारा हित है। यहां कोई निजी स्वार्थ नहीं रहेगा। इस स्तर में विकसित होने के लिए पहले मानवतावादी जमाने का जो विकसित स्तर है, उस स्तर को हमें हासिल करना होगा। यहां हमारे खुद के संघर्ष का सवाल काफी महत्वपूर्ण है। सिर्फ कॉमरेड शिवदास घोष और एसयूसीआई (सी) पार्टी के प्रति हमारे जज्बात हमें नहीं बचा पायेंगे। जिस तरह हर क्षण हमें अपने शरीर की हिफाजत करनी पड़ती है, इस माहौल के खिलाफ संघर्ष करना पड़ रहा है, हर क्षण हमारे शरीर में कोशिकाओं का विनाश हो रहा है, उनका निर्माण हो रहा है। बुर्जुआ-सर्वहारा का द्वन्द्व, क्रांतिकारी-गैर क्रांतिकारी का द्वन्द्व हर क्षण, हर मामले में हमारे अंदर काम कर रहा है और यदि यह संघर्ष सचेत रूप से न हो, तो हम जितनी बड़ी जिम्मेदारी में क्यों न रहें, हम गिरावट से अपनी हिफाजत नहीं कर पायेंगे और न ही हम कॉ. शिवदास घोष के योग्य छात्र बन पायेंगे।

मेरी अंतिम बात है, कॉमरेड शिवदास घोष शोषित लोगों के प्रति अपने गहरे प्यार की वजह से क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हुए। यदि हमारे अंदर जनता के प्रति गहरा प्यार न रहे, तो जन-संपर्क एक रोजमर्रा का काम बन जाता है। जनता के प्रति प्यार, गरीबों के प्रति प्यार और उसके आधार पर जन-संपर्क –ऐसा ही होना चाहिए। सभी नेता-कार्यकर्ता, जो जहां रहते हैं, हर किसी को एक आदर्श चरित्र के रूप में खड़ा होना होगा। पार्टी में हर नेता कार्यकर्ताओं के लिए आदर्श होगा। पहले खुद करें, फिर दूसरों को कहें। भाषणबाजी नहीं, अपने जीवन से सीखायें। मैं अपने क्षेत्र में, अपने मुहल्ले में अपने कर्तव्यों से, अपनी जिम्मेदारियों से, अपने स्नेह-प्रेम-प्यार से, अपनी सज्जनता, नम्रता, तथा शालीनता से अन्याय के खिलाफ लोगों की तकलीफों में उनका उपकार करने के जरिये घर-घर में उनका अपना बन जाऊंगा। इस तरह से हमें लोगों के बीच जाना होगा। वे चाहते थे कि नेतृत्व जिम्मेदारी दे या न दे हर कार्यकर्ता अपनी खुद की पहल पर सृजनात्मक ढंग से संगठन का निर्माण करे। वह क्लब, लाइब्रेरी, सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन का निर्माण करे और लोगों के बीच इंसानियत को, चरित्र को ले जाये। साथ ही जहां, जो भी अन्याय-अत्याचार हो रहा हो, अकेले होने पर भी उसका विरोध करे। यही है कम्युनिस्ट चरित्र। जब हम विक्षोभ-प्रदर्शन की बात करते हैं, तो वह महज कोई कार्यक्रम नहीं होता। इस विक्षोभ-प्रदर्शन के जरिये हमारे अंदर अत्याचारी के खिलाफ जो नफरत और विरोध का भाव भरा होता है और साथ ही शोषित-पीड़ित व्यक्ति के प्रति जो सहानुभूति होती है, उन सब का प्रकटीकरण होता है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो वह मात्र औपचारिक कार्यक्रम बनकर रह जाता है। हमारी पार्टी बढ़ रही है, और बढ़ेगी। लेकिन सिर्फ संख्या से काम नहीं चलेगा, गुणवत्ता चाहिए, चरित्र चाहिए। नेतागण कार्यकर्ताओं को जवाबदेही दें, नये कार्यकर्ताओं को जवाबदेही दें। नये कार्यकर्ताओं के विकास में मदद करें। नेताओं के आचरण में कहीं भी अफसरशाही बाधक न बने। कार्यकर्ता खुले मन से नेताओं से बात करें, उनके सामने अपना मुंह खोलें, उनकी आलोचना करें। मुझसे नहीं कह पाने का मतलब ही है मुझे अपमानित करना–ऐसा ही माहौल–जिसे कॉमरेड शिवदास घोष ने अपने समय में कायम किया था, उसी माहौल को पार्टी में निर्मित करना है।

देश में जहां, जब संभव होगा, दूसरे वामपंथी दल जिस हद तक आयेंगे, हम उन्हें आंदोलन में शामिल करवायेंगे। लेकिन हम जानते हैं कि आज वे संघर्ष का रास्ता छोड़ चुके हैं। अगर वे आंदोलन में आते भी हैं, तो वे एकमात्र वोट के लिए ही आयेंगे। इसके अलावा उनका कोई आंदोलन नहीं है। दूसरी बुर्जुआ पार्टियों का जो चरित्र है, इनका चरित्र भी वही है–वोट आधारित राजनीति। इसलिए हमें मजदूर, किसान, छात्र, नौजवान, महिला –हर तबके में संगठन निर्माण करना होगा। इन आंदोलनों के जरिये ही, सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिये ही धार्मिक अंधता और साम्प्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष करना होगा। दूसरी तरफ वैचारिक संघर्षों तथा चर्चा-बहस के जरिये इनके खिलाफ संघर्ष करना होगा। लेनिन ने कहा था कि ईमानदार पादरी बेईमान पादरी से ज्यादा खतरनाक है। क्योंकि कोई ईमानदार पादरी जब धर्म का प्रचार करता है, वह नुकसानदायक होता है। उसकी ईमानदारी की वजह से लोग गलतफहमी के शिकार होते हैं। लेकिन यदि पादरी बेईमान हो, तो वह उतनी गलतफहमी पैदा नहीं कर सकेगा। आज भाजपा-आरएसएस बेईमान, भ्रष्ट, सत्तालोलुप और हर तरह के अन्याय के साथ खड़ा है। वे धर्मपरायणता और ईमानदारी का चोला पहनकर लोगों को ज्यादा गुमराह नहीं कर पायेंगे। दूसरी तरफ जिस तरह कांग्रेस विरोध को पूंजी बनाकर भाजपा ने चुनाव में जीत हासिल की है, उसी तरह भाजपा विरोध को पूंजी बनाकर कांग्रेस और दूसरी पार्टियां आपस में गठजोड़ कर शायद अगली बार सत्ता पर कब्जे की लड़ाई में जीत हासिल कर लें। लेकिन जिस तरह भाजपा मननशीलता, तार्किक मानसिकता, वैज्ञानिक चिंतन प्रक्रिया बर्बाद कर रही है, जिस तरह उसने अंध धार्मिक विश्वास और मजहबी, जातिगत व साम्प्रदायिक नफरत की आग भड़कायी है, उसका खामियाजा काफी दिनों तक भुगतना पड़ेगा। सर्वहारा क्रांतिकारी पार्टी के तौर पर एकमात्र हम ही इस बर्बादी को रोक सकते हैं, बशर्ते कि हम मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष विचार के आधार पर दृढ़तापूर्वक खड़े हों तथा वर्ग संघर्ष और जन आंदोलनों का निर्माण करें, संगठन का निर्माण करें और अपनी जवाबदेही का निर्वाह करें। सभी कॉमरेड इन जिम्मेदारियों का निर्वाह करें, इसी उद्देश्य से मैंने ये सारी बातें कही।

इंकलाब जिन्दाबाद!
एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) जिन्दाबाद!
सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष लाल सलाम!

●●●

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2018-20
Posting at New Delhi PSO on 7–8 and 22–23 of every month, Fortnightly, Date of Publication : May 20, 2018

न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर के दुखद निधन पर एसयूसीआई (सी) का शोक संदेश

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर के दुखद निधन पर निम्नलिखित बयान जारी किया : ''न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर के निधन से देश ने लोकतांत्रिक अधिकारों और धर्मनिरपेक्ष मूल्यों की रक्षा के लिए संघर्ष करने वाले एक योद्धा को खो दिया है। वे भारत में मुस्लिमों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति पर 'न्यायमूर्ति सच्चर कमेटी रिपोर्ट' नाम से विख्यात अपनी आंखें खोल देने वाली रिपोर्ट के लिए जाने जाते हैं, जिसके अनुसार भारतीय मुसलमान अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों से भी कहीं अधिक पिछड़े हुए हैं, जिस पर रिपोर्ट के मुताबिक तुरंत कार्रवाई करने की जरूरत है। वे आपातकाल के काले शासन के खिलाफ साहसपूर्वक लड़े और लोकतांत्रिक अधिकारों और आंदोलनों के दमन का विरोध किया। न्यायमूर्ति सच्चर शिक्षा, पानी और बिजली के निजीकरण- व्यापारीकरण की प्रक्रिया के एक कटु आलोचक थे और महिलाओं और बच्चियों पर होने वाले अपराधों के खिलाफ आंदोलन में मदद करने में सबसे आगे थे।

वर्तमान परिदृश्य में न्यायमूर्ति सच्चर की अनुपस्थिति और अधिक महसूस की जाएगी जब हमारे देश में फासीवादी ताकतें लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक दृष्टिकोण व मूल्यों को तबाह कर देने पर तुली हुई हैं और लोगों को धर्म, जाति, सम्प्रदाय, रंग और नस्ल के आधार पर बांट रही हैं।''

जस्टिस राजेन्द्र सच्चर की स्मृति सभा का आयोजन

नई दिल्ली : ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा 29 अप्रैल को स्थानीय एन.डी. तिवारी भवन में दिल्ली हाई कोर्ट के भूतपूर्व मुख्य न्यायधीश व सच्चर कमेटी के चेयरमैन दिवंगत जस्टिस राजेन्द्र सच्चर की स्मृति में सभा का आयोजन किया गया। सभा में एडवोकेट अनिल नौरिया, एडवोकेट अशोक अरोड़ा, प्रो. जानकी राजन, प्रो. नंदिता नारायण, पीयूसीएल से एनडी पंचोली, सोशलिस्ट पार्टी(इंडिया) से डॉ. प्रेम सिंह, एआईएमएसएस की महासचिव कॉमरेड केया डे और दिल्ली राज्य अध्यक्ष प्रो. सुबोध शर्मा व राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक ने सभा में शिरकत की और दिवंगत जस्टिस राजेन्द्र सच्चर के जीवन-संघर्ष व उनके योगदान के बारे में अपने विचार रखे। सभा की अध्यक्षता एआईएमएसएस की दिल्ली राज्य उपाध्यक्ष कॉ. दीपिका जैन ने की।

वक्ताओं ने कहा कि जस्टिस राजेन्द्र सच्चर ने जीवन भर न्यायधीश के पद की गरिमा को निभाते हुए न्यायालय के अन्दर और बाहर न्याय के लिए संघर्ष किया। इमरजेंसी के काले दिनों में मानवाधिकारों के हनन के खिलाफ उन्होंने लड़ाई लड़ी। उसके बाद से ही वे देश के गरीबों पिछड़ों, अल्पसंख्यकों व महिलाओं पर होने वाले अत्याचारों के खिलाफ लड़ाई की आवाज बन कर उभरे।

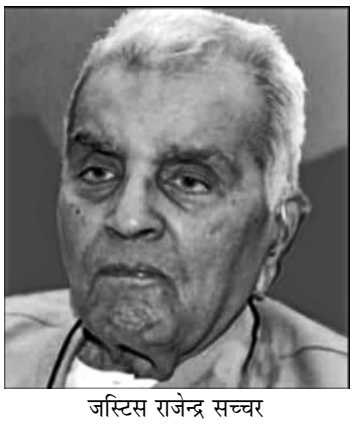
जस्टिस राजेन्द्र सच्चर

आज ऐसे समय में जब फासीवादी ताकतें अल्पसंख्यकों, दबे-कुचलों, गरीबों और महिलाओं पर बेइंतिहा शोषण-दमन चक्र चला रही हैं, जस्टिस राजेन्द्र सच्चर का चले जाना देश के प्रगतिशील आंदोलन के लिए एक बहुत बड़ा धक्का है। जस्टिस राजेन्द्र सच्चर अपने अथक संघर्ष, अपनी सादगी और स्नेहपूर्ण व्यवहार के लिए सदा-सदा के लिए सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्षरत पीढ़ियों में हमेशा याद किए जाएंगे।

दिल्ली : दिवंगत जस्टिस राजेन्द्र सच्चर को श्रद्धांजलि देते हुए एआईएमएसएस के नेता व अन्य नागरिक

महान कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर जगह-जगह आयोजित हुए कार्यक्रम

पटना : 5 मई को एसयूसीआई (सी) पटना जिला कमिटी द्वारा पटना विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के सेमिनार हाल में विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन के नेता, दुनिया के मेहनतकशों की मुक्ति के पथ प्रदर्शक, महान दार्शनिक कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर ''मौजूदा भारतीय परिप्रेक्ष्य और मार्क्सवाद'' विषयक परिचर्चा आयोजित की गई। इसमें पार्टी के झारखंड राज्य कमिटी सदस्य कॉ. सुमित राय ने महान कार्ल मार्क्स के योगदानों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मार्क्स ने जिस उन्नततर साम्यवादी समाज की रूपरेखा बनाई थी उसमें न केवल वर्ग विभाजन, वर्ग शोषण और वर्ग शासन का खात्मा हो जाएगा, बल्कि आम आदमी ऐसा नैतिक स्तर हासिल कर लेगा, जहां व्यक्तिगत स्वार्थ, लोभ-लालच, ईर्ष्या-द्वेष व धोखाधड़ी की मानसिकता का कोई अवशेष तक नहीं रहेगा। हर किसी की शारीरिक व मानसिक प्रतिभाओं के उन्मुक्त विकास के अवसर खुल जाएंगे। किसी की व्यक्तिगत आजीविका की स्वार्थपूर्ति के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के चहुंमुखी विकास के लिए सभी खुशी-खुशी स्वेच्छा से मेहनत करेंगे। उसमें प्रचूर मात्रा में उत्पादन होगा और सामाजिक तौर पर उत्पादित चीजों में से हरेक को उसकी आवश्यकता के अनुसार उसका हिस्सा मिलेगा। कम्युनिस्ट संस्कृति के आधार पर जब लोगों की नीति-नीतिकता, कर्तव्य परायणता इतना ऊंचा स्तर हासिल कर लेगी कि राज्य, सरकार, कानून का शासन और दमन के यंत्र अप्रासंगिक होकर मुरझा जाएंगे।

प्रो. ओ. पी. जायसवाल ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि मार्क्स के चिंतन के आधार पर ही रूस में ऐतिहासिक नवम्बर क्रान्ति सफल हुई थी। फिर चीन में जनगणतांत्रिक क्रान्ति सफल हुई थी। पूरा पूर्वी यूरोप समाजवादी बन गया था। उत्तर कोरिया, क्यूबा एवं वियतनाम में क्रान्तियां हुई थीं। बेहद उत्कृष्ट ज्ञान-भण्डार जो उन्होंने मानवता को दिया है वह आज अत्यंत प्रासंगिक है और भविष्य में भी काफी लम्बे अर्से तक प्रासंगिक बना रहेगा।

प्रो. नवीन चन्द्रा ने महान कार्ल मार्क्स के जीवन-संघर्ष पर प्रकाश डाला। प्रो. डेजी नारायण, डा. पीएनपी पाल, अरूण शाद्वल, सुनील सिंह आदि ने भी सभा को संबोधित किया। विषय प्रवेश कॉ. राजकुमार चौधरी व संचालन पार्टी की पटना जिला सचिव कॉ. साधना मिश्रा ने किया।

सोनीपत : 5 मई को महान कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर एसयूसीआई(सी) की ओर से सोनीपत जिला सचिव कॉ. ईश्वर सिंह राठी की अध्यक्षता में यहां कुम्हार धर्मशाला में आयोजित परिचर्चा में पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य व राज्य सचिव कॉ. सत्यवान, राज्य कमेटी सदस्यों कॉ. राजेन्द्र सिंह और कॉ. रामफल ने बात रखी। इस अवसर पर 'महान कार्ल मार्क्स की याद में' पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

ग्वालियर : महान कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर एसयूसीआई (सी) की ग्वालियर जिला इकाई द्वारा जनसभा की गई। वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष में मार्क्सवाद की प्रासंगिकता पर अपनी बात रखते हुए मुख्य वक्ता पार्टी के राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल ने कहा कि आज हमारे देश की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक समस्याओं का मूल कारण मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्था में है और इनका हल केवल वैज्ञानिक समाजवाद में ही सम्भव है। उन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद को जन-जन तक लेकर जाने की अपील की।

सभा की अध्यक्षता पाटी के जिला सचिव कॉ. सुनील गोपाल ने की। पार्टी की राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रचना अग्रवाल ने भी बात रखी। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

सोनीपत : महान कार्ल मार्क्स की 200वीं जयंती पर परिचर्चा को सम्बोधित करते हुए कॉ. सत्यवान

ग्वालियर

पेट्रोल-डीजल के दामों में वृद्धि की एसयूसीआई(सी) ने की निन्दा

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभास घोष ने 21 अप्रैल को ईंधन तेल की कीमतों में रिकॉर्ड वृद्धि पर निम्नलिखित बयान जारी किया :

भारत में पेट्रोल-डीजल के दामों में रिकॉर्ड तोड़ वृद्धि कर दी गई है। अंतरराष्ट्रीय कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि को इसकी वजह बताना महज एक बहाना है क्योंकि यहां भारत में केंद्रीय और राज्य सरकारें पेट्रोल और डीजल पर भारी मात्रा में कर और सेस थोप देती हैं। सर्वविदित है कि ईंधन की कीमतों में यह वृद्धि स्वाभाविक रूप से एक प्रपाती प्रभाव डालेगी। इसके चलते दैनिक आवश्यकताओं की चीजों के दाम और भी बढ़ जाएंगे जिससे आम लोगों की कठिनाई-परेशानी और अधिक बढ़ जाएगी।

इसलिए, हम मांग करते हैं कि सरकार तुरंत पेट्रोल-डीजल से कर और सेस वापस ले ले और बाजार में पेट्रोल-डीजल तेल की कीमतों को कम करे।

जस्टिस राजेन्द्र सच्चर के निधन पर एआईएमएसएस ने दी श्रद्धांजलि

ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन की अध्यक्ष कॉमरेड छाया मुखर्जी ने 21 अप्रैल 2018 को निम्नलिखित बयान जारी किया :

हम न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त करते हैं। वे महिलाओं की गरिमा और सम्मान की रक्षा के लिए एक सच्चे सेनानी थे। वे महिला मर्यादा पर हमला करने वाले असामाजिक तत्वों के साथ-साथ प्रतिक्रियावादी ताकतों के खिलाफ लड़ने वाले एक योद्धा थे। जब भी हमने महिलाओं पर अपराध और अत्याचार के खिलाफ कोई आंदोलन खड़ा किया, वे हमारी लड़ाई और संघर्ष में हमेशा हमारे साथ रहे। न्यायमूर्ति राजेंद्र सच्चर हमेशा अदालत के अंदर और बाहर दोनों जगह सच्चाई और न्याय के पक्ष में खड़े रहे। वे हमारे देश के अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए लड़े और जातिवाद, सांप्रदायिकता और अन्य सभी संकीर्ण सांप्रदायिक प्रवृत्तियों और सोच के खिलाफ भी लड़े। उनका निधन जनवादी आन्दोलन, विशेष रूप से महिला आन्दोलन के लिए एक बड़ा नुकसान है। हम इस महान मानवतावादी के प्रति सम्मान और श्रद्धांजलि देते हैं।

...मई दिवस (पृष्ठ 1 का शेष)

संघर्ष के जरिये पूंजीवादी शोषण से मुक्ति की जो चाह व्यक्त हुई थी, वह चाह हमारे देश में आज भी पूरी नहीं हुई है। जाहिर है कि आज भी मेहनतकश लोगों को शोषण से मुक्ति नहीं मिली है। देश-प्रदेश के ज्यादातर उद्योगों व कारखानों में 12 घण्टे काम लिया जा रहा है। पूंजीपतियों की ताबेदार सरकार द्वारा श्रम कानूनों में पूंजीपतियों के स्वार्थ में संशोधन किये जा रहे हैं।

वक्ताओं ने शोषण से मुक्ति के लिए मेहनतकश जनता के आपसी भाईचारे को मजबूत करते हुए अपनी मांगों के लिए जोरदार मजदूर आन्दोलन गठित करने का आह्वान किया।

भूल सुधार

सर्वहारा दृष्टिकोण (वर्ष 33, अंक-8) में 'विज्ञान शिक्षा को बचाने..' शीर्षक से छपी खबर में फोटो की केप्शन में डॉ. राधाकष्ण कोनार नाम छप गया था। उसकी जगह डॉ. सत्यजीत कुमार सिंह पढ़ें। अनजाने में हुई इस गलती के लिए हमें खेद है।—सम्पादक, सर्वहारा दृष्टिकोण

Printed and published by Com. Satyawan on behalf of the Central Committee of the Socialist Unity Centre of India (Communist) and printed at M/s Balaji Offset Printers, 315/21, Shahzada Bagh, Daya Basti, Delhi and published at 3A/38, WEA, Satnagar, Karol Bagh, New Delhi-110005. Editor: Com. Satyawan, Member, Central Committee, SUCI(C)."

Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com , sarvaharadrishtikon@yahoo.com फोन नं. : 011-25726631, 9868350503